* ॐ *

श्री जैन श्वेताम्बर

वृहद् विवाह पद्धत्ति

लेखक—

पंन्यासजी जुगादिसागरजी महाराज

सहायक—

श्रीमान् सेठ मूलचन्दजी साहिब गोलेछा जबलपुर निवासी ने अपनी स्वर्गीय धर्म पत्नी श्रीमती सूरजकुँवर देवी के स्मरणार्थ छपवा कर भेंट की

प्रकाशक—

सेठ हंसराजजी प्रतापचन्दजी गोलेछा

सदरबाजार, जबलपुर

मुद्रक—

के० हमीरमल लूणिया,

अध्यक्ष-दि डायमण्ड जुबिली प्रेस, अजमेर

वीर सं० २४६५	मूल्य	वि० सं० १९९५
सन् १९३९ ई०	सदुपयोग	प्रथम बार १०००

श्रीमान् सेठ मूलचन्दजी साहिब गोलेछा, जबलपुर



आपने श्री जैन श्वेताम्बर वृहद् विवाह पद्धति का यह पुस्तक अपनी
स्वर्गीय धर्मपत्नी श्रीमती सूरजकुँवर देवी के स्मरणार्थ छपवा
कर जैन समाज में विवाह संस्कार विधि का जो
प्रायः अभाव सा था उसकी पूर्ति की है।

डायमण्ड जुबिली प्रेस, अजमेर

भूमिका

संसार रूपी चिरस्थायि संस्था को सुचारू रूप से चलाने में सब से पहिला कारण विवाह विधान है। गृहस्थी के सोलह संस्कारों में इसका स्थान चौदहवाँ है, बिना इसके शुद्धाचार और सद्विचार रह नहीं सकता। नीतिकारों ने भी "आचारो प्रथमो धर्मं" कहा है। अतएव प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि शुद्धाचार एवं सद्विचार पर अधिक लक्ष दे।

आज हमने यह लघु पुस्तक 'जैन विवाह विधि' आपकी सेवा में उपस्थित करने का प्रयत्न किया है, क्योंकि हमारे कितनेक भाई तो इस बात को अभी तक जानते भी नहीं हैं कि जैनों में भी विवाह विधि आदि संस्कारों का विधान है। इसका कारण यह है कि आज कई अर्से से जैनों के घरों में प्रत्येक संस्कार और विशेषत विवाह विधि जैनेतर ब्राह्मणादि कराते हैं। परन्तु इसमें हमें फायदा है या नुकसान, इस पर बहुत कम मनुष्यों का ध्यान पहुँचता है।

वास्तव में देखा जाय तो जैनों के संस्कार जैन विधि से ही होने चाहिये। एक सज्जन ने क्या ही अच्छा कहा है कि जैन लोग

भूमिका

संसार रूपी चिरस्थायि संस्था को सुचारू रूप से चलाने में सब से पहिला कारण विवाह विधान है। गृहस्थी के सोलह संस्कारों में इसका स्थान चौदहवाँ है, बिना इसके शुद्धाचार और सद्विचार रह नहीं सकता। नीतिकारों ने भी "आचारो प्रथमो धर्मः" कहा है। अतएव प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि शुद्धाचार एवं सद्विचार पर अधिक लक्ष दे।

आज हमने यह लघु पुस्तक 'जैन विवाह विधि' आपकी सेवा में उपस्थित करने का प्रयत्न किया है, क्योंकि हमारे कितनेक भाई तो इस बात को अभी तक जानते भी नहीं हैं कि जैनों में भी विवाह विधि आदि संस्कारों का विधान है। इसका कारण यह है कि आज कई अर्से से जैनों के घरों में प्रत्येक संस्कार और विशेषत विवाह विधि जैनेतर ब्राह्मणादि कराते हैं। परन्तु इसमें हमें फायदा है या नुकसान, इस पर बहुत कम मनुष्यों का ध्यान पहुँचता है।

वास्तव में देखा जाय तो जैनों के संस्कार जैन विधि से ही होने चाहिये। एक सज्जन ने क्या ही अच्छा कहा है कि जैन लोग

समकित धारण करते समय यह प्रतिज्ञा करते हैं कि आज पीछे सिवाय अरिहन्त देव के और किसी भी देव देवी को न मानेंगे और न शिर ही झुकावेंगे तथा एक माह में चौमास पाक्षिक तीन चौमासी, एक संवत्सरी प्रतिक्रमणों में "मिच्छामि दुक्कड" भी देते हैं कि कभी भूल चूक के भी अन्य देव देवी को माना हो तो "मिच्छामि दुक्कड" हो। भला जिन देवताओं के लिए हम एक वर्ष में ७८ वार नफरत करते हैं, उन्हीं देव देवियों को शुभ प्रसंग पर बुला कर स्थापना करें वे हमारा कैसे कल्याण कर सकते हैं? मिसाल समझिये कि एक वकील है और उसके साथ हम बार बार नफरत करते हैं और उस वकील को ही हम हमारा मुकदमा सोंप कर पैरवाई करने की बात करते हैं, क्या वह मुकदमा हम स्वप्न में भी जीत सकेंगे? हर्गिज नहीं। यही कारण है कि जिन देव देवियों को हम कुदेव समझते हैं, उनके साथ थोड़ा ही व्यवहार हुआ हो तो "मिच्छामि दुक्कड" देते हैं। फिर हम जैसे शुभ प्रसंग के मुकदमे की पैरवाइ के लिये उनके ही सुपुर्द करते हैं, समझ में नहीं आता कि हमारा मामला कैसे सुधरेगा? शायद हमारी समाज में विधवा और विधूरों की संख्या बढ़ने का यही तो कारण न हो? अस्तु।

प्यारे जैन भाईयो! आपके आचार्यों ने ऐसा कोई भी विषय ... है कि जिसकी भीख अन्य मतियों से मांगनी पड़े।

लीजिये—जैन धर्म के स्तम्भ, प्रकाण्ड विद्वान आचार्य श्री वर्द्धमान सूरि रचित "आचार दिनकर" नामक बृहद् ग्रन्थ जिसमें अन्योन्य विधानों के साथ "विवाह संस्कार" का भी विस्तार पूर्वक विधान है। पूर्व जमाने में जैनों के विवाह जैन विधि से ही होते थे। यही कारण था कि जैन समाज धन धान्य पुत्रादि से समृद्धिशाली था, और आज भी इसी प्रकार होना जरूरी है। इतना ही क्यों, पर कई स्थानों पर तो जैन गृहस्थों के विवाह जैन विधि से होने पुन: प्रारंभ भी हो गये हैं और कई जैन नवयुवकों ने तो प्रतिज्ञा भी ले ली है कि हम हमारा या हमारे सम्बन्धियों का विवाह जैन विधि से ही करवायेंगे।

आज हमारी समाज मे जैन विधि से विवाह करवाने वालों की भी कमी नहीं है क्योंकि जैनों में एक "महात्मा मत्थेण" समाज जो जैनों के "कुल गुरु" कहलाते हैं और इनकी संख्या भी काफी तादाद में है, यदि जैन समाज इनको अपनाले और ऐसी शिक्षा-संस्था खोल कर इनको तालीम दी जावे तो वे लोग जैन समाज की इस त्रुटि की अच्छी तरह से पूर्त्ति कर सकेंगे।

हमारे दिगम्बरी भाइयों में तो इस बात का काफी प्रचार है कि उनके विवाह जैन विधि से पण्डित (गृहस्थ) लोग करवाते हैं। आशा है कि हमारे श्वेताम्बर भाई भी इसका अनुकरण कर जहाँ

महात्मा लोग नहीं पहुँच सकते हों वहां सदाचारी श्रावकों द्वारा जैन विधि से विवाह करवायेंगे।

कई वक्त यह सवाल सहज ही में पैदा हो जाता है कि हम लोग जैन विधि से विवाह करवा सकते हैं परन्तु जैन विधि से हम लोग अनभिज्ञ हैं। "आचार दिनकर" जो ग्रन्थ है वह देव वाणी अर्थात् संस्कृत भाषा में रचा हुआ है इसलिये वह हमारे लिये इतना उपयोगी नहीं हो सकता है कि जितना हिन्दी भाषा का? इस विषय में कई पुस्तकें गुजराती भाषा में मुद्रित हुई थीं तथा अन्य संस्थाओं ने भी हिन्दी भाषा में पुस्तकें छपवाई थीं परन्तु वे कम संख्या में छपने के कारण अब ढूंढने पर भी नहीं मिलती हैं। इस हालत में इस त्रुटि की पूर्ति के लिये समाज सेवा को लक्ष्य में रखकर हम "जैन विवाह विधि" नामक पुस्तक छपवाने में हाथ डाला है, आशा है यह कार्य्य समाज पसन्द कर अवश्य अपनावेगा। यदि समाज हमारे उत्साह को बढ़ावेगा तो हम समाजोपयोगी और भी कई कार्य्य समाज की सेवा में उपस्थित करेंगे। इति शुभम्॥

आपका
समाज सेवक—
दफ्तरी जवाहरलाल जैन

लेखक के दो शब्द

वैसे तो इस समय बहुत सी जैन पद्धत्तिया प्रचलित हैं लेकिन इस जैन श्वेताम्बर "बृहद् विवाह पद्धत्ति" का विशेष वणन इसलिये किया गया है कि इसको देखकर हरएक साधारण पढ़ा लिखा हुवा भी सरलता के साथ सब विवाह या विवाह का मुहुर्त्त या सगाई (वाग्दान) क लिये लड़का लड़की क गुण देखना वगैरा सर्व विधि सरलता के साथ करा सकेगा। जहा पर किसी योग्य जानकार जैन श्वेताम्बरी पंडित की व्यवस्था नहीं होती, वहा पर जेन लोग अजैन विधि से विवाह करा लेते हैं और उसमें कई एक त्रुटियां रह जाती हैं। बस इन्हीं सब बातों की पूर्त्ति के लिये इसका उदय हुवा है। इसमें जगह २ [redacted] एक प्रकरण के नोट वगैरा देकर इस तरह समझा दिये गये [redacted] कि जिस तरह किसी व्यक्ति को पास में रख कर बताया जाता है। इसी तरह इस पुस्तक में वेदि, हवनकुण्ड, विनायक यन्त्र और कौतुकागार वगैरा की स्थापना कराने का मन्त्र अर्थ सहित दिया गया है। इससे कोई भी कार्य्य करने की किसी को पढ़ने को

कहीं २ जैन विवाह पद्धत्ति की

देखने में आता है परन्तु वे पुस्तकें यदि २ ३ एकत्रित हो जांय और वहां पर जैन विधि से लग्न कराना चाहें तो किसी में कुछ और किसी में कुछ कम ज्यादा पाया जाता है। किसी में अन्य मतियों की क्रियाएँ भी मिलती हैं। यह सोचकर हमने 'आचार दिनकर सूत्र' की साक्षी से आदि से अन्त तक पूर्ण विधि इसी में दी है।

कई एक भाई तो आजकल जानते ही नहीं हैं कि अपने जैन में सोलह संस्कार हैं या नहीं। इसका कारण यह है कि आज कई वर्षों से जैनियों के घरों में प्रत्येक संस्कार और विशेषतः विवाह विधि अजैन ब्राह्मण ही कराते हैं परन्तु इसमें अपने को लाभ है या नुकसान इसका बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। वास्तव में देखा जाय तो जैनों को प्रत्येक संस्कार जैन विधि से ही कराना चाहिये।

एक सज्जन पुरुष ने क्या ही अच्छा कहा है कि जैनी लोग समकित धारण करते समय यह प्रतिज्ञा लेते हैं कि अब आइन्दा से जैनी देवगुरु और धर्म सिवाय अन्य मजहब के देवगुरु और धर्म को नहीं मानेंगे और न सिर झुकावेंगे और हरएक साल में पाक्षिक चौमासी, संवत्सरी प्रतिक्रमण करते समय मिच्छामि दुक्कड़ भी देते हैं, भूल चूक से भी माना हो तो मिच्छामि दुक्कड़ कहते हैं।

भला जिन देवताओं के लिये हम एक वर्ष में २५ दफे नफरत करते हैं उन्हीं देव देवी और गुरुओं को शुभ प्रसंग पर बुलाकर स्थापना करें तो कहो वे हमारा कैसे कल्याण कर सकते हैं। एक अच्छे विद्वान ने कहा

हुए मनुष्य जिसको हम बार २ खराब कहते हैं और उस के

-साथ नफरत रखते हैं और उसी में हम मिश्रण करें तो क्या वह हमें लाभ पहुँचा सकता है ? हम तो जानते हैं स्वप्न में भी नहीं। सोचो ! यदि थोड़ा सा कार्य भी उसी के साथ हो तो मिच्छामि दुक्कड़ देते हैं फिर हम जैसे शुभ कार्य का अन्य मूर्तियों के देवी देवियों के सुपुर्द करते हैं। समझ में नहीं आता कि हमारा मामला कैसे सुधरेगा, शायद हमारी समाज में विधवा और विधुरों की संख्या बढ़ने का यही तो कारण नहीं है। अतः यही सोच कर इस पुस्तक को प्रकाशित किया गया है।

हमने प्रायः सभी विवाह पद्धतियों को देखकर तथा 'आचार दिनकर सूत्र' से मिलान किया है। तथा जहां तक हो सका वहां तक सरल एवं सर्वोपयोगी बनाया है तथापि त्रुटियां रह जाना सम्भव है। अतः विद्वान लोग विचार के साथ पढ़ें और जो त्रुटियां ज्ञात होवें उनके लिये हमें सूचना दें ताकि भविष्य की आवृत्ति में सुधार किया जा सके। जो धर्मनिष्ठ महाशय इसका जितना अधिक प्रचार करेंगे उतने अधिक वे यशस्वी पुण्यवान एवं लोकमान्य बनेंगे। शुभं भूयात्।

जैन समाज का शुभेच्छु—
पन्यास जुगादिसागर



शुभ संदेश

जिन कंठ पै धार कुठार चले, उनके हित हे विधि ! हार बनूँ।
जिन सेज पै सूलों की होती व्यथा, उन पै विधि के सुख-सार बनूँ॥
जिन शीश के मौट हो पाप सने, उनका छवि की तरवार बनूँ।
जिन पै अहंकार की धूलि पड़ी, उनके हित ज्ञान बयार बनूँ॥

संसार के सब ही धर्मों में कुछ न कुछ विशेषता अवश्य पाई जाती है। यद्यपि यह भिन्न २ देशों के समयानुकूल बने हैं परन्तु उनमें एक ही आदर्श सर्वोच्च रखा गया है और वह है 'सुख और शान्ति।' इसी सुख शान्ति के लिये प्रत्येक जीव कुछ न कुछ पराक्रम करता ही रहता है। इसकी सच्ची और मजबूत नींव सद्भावनाओं पर निर्भर रहती है।

उत्तम भावनाओं से प्रेरित हो "जैन श्वेताम्बर बृहद् विवाह पद्धति" नामक पुस्तक के सहायक एवं संरक्षक श्रीमान सेठ मूलचन्दजी साहिब गोलेछा जबलपुर निवासी जब कभी किसी के विवाह आदि में जाते और विवाह संस्कार को देखते तो उनके दिल में कई तरह की विडंबनाएँ उठतीं जिससे वे कभी २ व्याकुल हो उठते थे। अन्य धर्म के संस्कारों को व उनमें बहुत सी विधियाओं को देख कर उनके मन में उद्वेग पैदा हो जाता और वे सोचने लगते कि क्या इससे अधिक सरल और उच्चादर्श युक्त विवाह पद्धति जैन धर्म में भी है ? इस प्रकार की भावना उनके हृदय में सदैव बनी रहती थी।

आपकी स्वर्गीय धर्मपत्नि श्रीमती सूरजकुँवर बाई भी धर्म कर्म में बहुत निपुण थीं और उन्हें जैन धर्म और उसकी दैनिक क्रियाओं से बहुत ही प्रेम था। अल्पवयी होने पर भी उनका सब कार्य्य नियम पूर्वक रहता था। वे नितप्रति सामायिक प्रतिक्रमण करतीं और देव दर्शनों में सदैव लगी रहती थीं। समयानुकूल तपस्या का जैसा २ योग होता था उसे वे कभी भी हाथ से न जाने देती थीं। तथा दान पुन्य में भी हमेशा सतर्क रहती थीं। श्री जिनेन्द्र देव की पूजन, साधु-भक्ति और स्वधर्मी बन्धुओं की सेवा में उनकी बहुत ही श्रद्धा रहती थी। ज्ञान की महिमा को अपने हृदय में विशेष स्थान देती थीं। २० वर्ष की उम्र में अट्ठाई की तपस्या भी कर ली थी, उस समय श्री जिनेन्द्र भगवान की सवारी बहुत धूम धाम से जुलूस के साथ निकाली गई थी। जब २१ वर्ष की उम्र में उनको वेदनी कर्म ने आ घेरा तो वे सदैव धर्म ग्रंथ सुना करतीं और स्वर्गवास होने के तीन दिवस पेश्तर ही उन्हें ज्ञान हो गया था कि अब अन्तिम समय नजदीक आ गया है। उस समय सब कुटुम्बी वर्ग वगैरा को बुलवा कर बड़े प्रेम से मिलीं और सबसे क्षमत क्षमापणा किये और कोई तरह की मोह ममता न रखती हुई दान पुन्य करती रहीं। आखिरी दिवस उन्होंने अपने पतिदेव से ज्ञान खाते में कुछ द्रव्य खर्च करने की याचना की, यह उनकी अन्तिम इच्छा थी जिसे उनके पति (जबलपुर निवासी श्रीमान् सेठ मूलचन्दजी साहिब गोलेछा) ने स्वीकार कर उन्हीं के स्मरणार्थ यह पुस्तक सर्वोपयोगी और जैन शासन की शोभा बढ़ाने वाली समझ कर सर्व सज्जनों को भेंट स्वरूप अर्पण की है।

इस पुस्तक के लेखक पन्यासजी श्री १०८ श्री गुणदिसागरजी महाराज हैं। आपने बहुत परिश्रम करके इसका संग्रह किया है। यह पुस्तक सुन्दर, स्पष्ट एवं रोचक है। इस पुस्तक में आद्योपान्त वर वधु के सम्बंध विषयक प्रकरणों का अच्छा निरूपण किया गया है। सगाई, सम्बंध एवं विवाह संस्कार की पूर्ण विधि शास्त्रोक्त रूप से दर्शाई गई है। विशेष आधार इस पुस्तक में "आचार दिनकर सूत्र" का ही लिया गया है। इसमें विवाह संस्कार की जितनी उपयोगी बातें होनी चाहिये उनका उचित रीति से दिग्दर्शन कराया गया है। वेदि, हवनकुंड, जिनायक यंत्र और कौतुकागार आदि स्थापना के यंत्र मंत्र बहुत ही स्पष्ट रूप से दिखाये गये हैं। इस पद्धति में विशेष बात यह है कि अगर किसी स्थान पर जैन पंडित न भी हो तो कोई भी अक्षर ज्ञान धारी वहां विवाह संस्कार जैन पद्धति से इस पुस्तक द्वारा करा सकता है।

इस पुस्तक में रूढ़ियों का एवं कुप्रथाओं का आडम्बर बिलकुल नहीं रक्खा गया है और न कुत्वादि का कुत्सित मार्ग ही अवलम्बन किया गया है। अतः ऐसे जाग्रत समय में, जब कि सब ही अन्य धर्मावलम्बी अपने २ धर्म की प्रतिष्ठा बढ़ाने में अग्रसर हो रहे हैं तब क्या प्रत्येक जैन धर्मावलंबी अपने धर्म की उन्नति करने तथा प्रतिष्ठा बढ़ाने में इस पुस्तक को अपना कर सदुपयोग न करेंगे।

माह वद ११
सम्वत् १९९९
सन् १९३९ ई०

विनीत—
गुलाबचन्द वैद्य मुथा
छिन्दवाड़ा (सी पी)

(

सूची पत्र



आवश्यक-सामग्री

विवाह की पूजा सामग्री सक्षेप से नीचे दी गई है। यह सामग्री पूराने से लेके समाप्ति पर्यन्त है।

कुकुम १ छटाक	चन्दन का बुरादा १ पाव
मोली १ पाव	रूई आधापाव पीजी हुई
सुपारी नग ५१	नमक की डली १ छटाक
बादाम नग २१	सिंघाड़ा आधापाव ≶=
नारियल नग ११	दूध १ पाव
मेंहदी १ छटाक	दही १ पाव
केशर १ तोला	कुश यथा जरूरत
गुलाल १ पाव	पुष्प हार कम से कम ५
गुड़ १ पाव	खुले पुष्प नग ५०
धाणा २ छटाक	पान (तांबूल के) नग २१
घृत सवासेर ≶१।	तोरण आम के पत्तों का मंडप आदि के नाप से
वासक्षेप १ छटाक	दूर्वा
होम का पुड़ा आधासेर ≶॥	हरे फल नग ११
कपूर आधापाव ≶=	होम के लिए इन्धन यथा जरूरत
खोपरा आधासेर ≶॥	आम की लकड़ी
लूग १ छटाक	चंदन की लकड़ी १ पाव
इलायची १ छटाक	

लकड़ी का पट्टा छोटा नग ४
तोरण लकड़ी का नग १
पूंखने की चीजें पांच जो छोटी छोटी हो जैसे-पान, हल, मूसल, घूमर, च० की जाक
मट्टी के दीपक नग ११
मट्टी के कलस छोट २ मोटे २
कुड़ा छोटा या प्याले नग ५
कची ईंटें नग १५०
जव ऽ॥ सेर तिल ऽ॥ सेर
चावल ऽ२॥ सेर, मूगपान ऽ=
पान का लाई ऽ॥ सेर
चावल का आटा ऽ॥ सेर
पिसी हुई हल्दी पाव ऽ।
पीतल या किसी अन्य धातु के कलस २
गुलाबजल जरूरत माफिक
पच रंगे वस्त्र इस तरह लाल दारदार, काला १ हाथ, पीला १ हाथ, सफेद २॥ वार, हरा १ हाथ, आसमानी १ हाथ, छींट १ हाथ
नगदी जरूरत माफिक

पुस्तक मिलने का पता—
सेठ हंसराजजी प्रतापचन्दजी गोलेछा,
सदर बाजार
मु० पो० जबलपुर (सी० पी०).





श्री जैन श्वेताम्बर — — बृहद् विवाह पद्धति

॥ मंगलाचरण ॥

इष्ट निष्ट वियोग योग हरणी, कल्याण निष्पादिनी ।
चिंता शोक कुयोग रोग शमनी, मूर्तिर्जना नंदिनी ॥
नित्य मानव वाच्छीतार्थं करणात्, मंदार सवादिनी ।
कल्याणं विद धातु सुंदर वर, सत्य वचो वादिनी ॥१॥

श्री जैन श्वेताम्बरी सोलह संस्कारों में से यह चौदहवां "विवाह संस्कार" है। यह संस्कार तब करना चाहिये कि जब स्त्री पुरुष उम्रवान हो जांय। कच्ची उम्र में यह संस्कार करना अच्छा नहीं।

विवाह के मुख्य दो भेद हैं। पहिला 'पाप विवाह' और दूसरा 'आर्य विवाह'।

'पाप विवाह' के चार भेद निम्न प्रकार से हैं:—

पहला भेद—कोई स्त्री पुरुष प्रेमानुरागी होकर माता पिता की आज्ञा बगैर एकान्त एक मकान में मिलकर कहें कि अपन दोनों आपस में स्त्री पुरुष हैं। यह 'गन्धर्व विवाह' कहलाता है।

दूसरा भेद—शर्त लगाकर कन्या देना जैसे जूआ खेलते ऐसी शर्त लगावे कि मैं हारूँ तो अपनी कन्या दूँगा, तुम हारो तो तुम्हारी लड़की मैं ले लूँगा। यह 'असुर विवाह' कहलाता है।

तीसरा भेद—जोरा जोरी दूसरे की लड़की लेकर अपनी स्त्री बनाना इसका नाम 'राक्षस विवाह' कहलाता है।

चौथा भेद—विद्या के बल से किसी की लड़की को उड़ाकर उसके साथ में आप ब्याह कर लेना इसका नाम 'पिशाच विवाह' कहलाता है।

'आर्ष विवाह' के चार भेद निम्न प्रकार से हैं —

पहला भेद—शुभ दिन और शुभ लग्न में पूर्वोक्त गुण युक्त तथा श्रीमान, [illegible] वर को बुला कर उसी [illegible] के साथ मन्त्रोच्चारण [illegible]
' [illegible] कहते
क्रिया

॥ कन्यादान मंत्र ॥

ॐ अर्हं सर्व गुणाय सर्व विद्याय सर्व सुखाय सर्व पूजिताय सर्व शोभनाय तुभ्य वस्त्र गंध माल्या लंकारा लंकृतां कन्या ददामि प्रति ग्रहणाष्व भद्र भवतु ते अर्हं ॐ ॥

इस तरह मंत्र उच्चारण करके कन्या देवे और वर कन्या को लेकर के अपने घर जावें। यह रीति प्रायः विंध्याचल पर्वत पर है। यह 'ब्राह्म विवाह' की विधि कही जाती है।

दूसरा भेद—'प्रजापत्य विवाह' यह जगत में प्रसिद्ध है। इसलिये इसका वर्णन आगे किया गया है।

तीसरा भेद—वन में रहनेवाले गृहस्थ ऋषि लोग अपनी पुत्री को अन्य ऋषि के पुत्र को बुला करके अपनी कन्या के संग गौ बैल वगैरा दे करके कन्या को दे देते हैं, अन्य कोई उत्सवादि नहीं करते हैं। इस विवाह का मंत्र अन्य धर्म में है मगर जैनधर्म में नहीं है। यह 'आर्ष विवाह' है।

चौथा भेद—'देवत विवाह' है इसमें पिता अपने पुरोहित को इष्ट पूर्व कर्म के अंत में अपनी कन्या को दक्षिणा की तरह देते हैं। इसका भी मंत्र जैन शास्त्र में नहीं है।

नम्बर ३ व ४ ये दोनों विवाह जैन शास्त्र के अनुकूल नहीं हैं। ये चारों विवाह माता पिता की आज्ञा होने

के कारण आर्ष विवाह कहलाते हैं। इस पुस्तक में दूसरा प्रजापत्य विवाह की विधि विधान यहां पर सम्पूर्ण लिखा गई है।

सब के पेश्तर वाग्दान (सगाई) किसके साथ करनी चाहिये उसका सम्बन्ध लिखा जाता है। कारण वाग्दान (सगाई) होने के कितने वर्ष मास या दिन के बाद लग्न होना उचित है। उससे पहले वर कन्या का कुल देखने की विधि लिखी जाती है।

वाग्दान (सगाई) किसके साथ करनी चाहिये

॥ श्लोक ॥

ययोरेव मम शील, ययोरेव मम कुल॥
तयो मैत्री विवाहश्च नतु पुष्ट विपुष्टयो ॥१॥

जो समवृत्त, शील्वान, सम जाति वाले हैं जिसके देश कृत्य आदि उनका विवाह सम्बन्ध जोड़ना योग्य है। इस कारण जो अविकृत हैं, उनको विकृत कुल की कन्या ग्रहण नहीं करनी चाहिये। 'विकृत कुल यथा' जिसके कुल में शरीर के ऊपर रोम बहुत हो, नेत्र रोग हो, उदर रोग हो, ऐसे कुल की कन्या कदापि ग्रहण नहा करनी चाहिये। कारण विकृत कुल होने से "कन्या विकृता यथा" कन्या वर से लम्बी हो, हीन अंग वाली हो, कपील्ला हो, ऊंची दृष्टी वाली हो, [illegible] कन्या विचक्षणों

को त्यागने योग्य है। इसके अतिरिक्त देवता, ऋषि, ग्रह तारा, अग्नी, नदी, वृक्षादिक के नाम से जो कन्या हो तथा जिसके शरीर ऊपर बहुत रोम पिंगाक्षी और घरघरा स्वर वाली हो, उस कन्या का पाणी ग्रहण वर्जित है। "कन्यादाने वरस्य विकृत कुलं यथा" वर कन्या से हीन हो, मूर्ख हो, वधु सहित हो, दरिद्र हो, व्यस्त (कुष्ट) संयुक्त हो, कन्या ऐसे कुल और पुरुष को वर्जित है। इसके अतिरिक्त मूर्ख, निर्धन, दूर देश में रहने वाला, शूर, योद्धा, मोक्षाभिलाषी, कन्या से तीन गुणी अधिक उमर वाला, ऐसे पुरुष को भी कन्या न देनी चाहिये। इस वास्ते अविकृत कुल का और दोनों विकृत कुल वालों का विवाह सम्बन्ध जोड़ना योग्य है तथा पांच शुद्धियें देख कर वर वधु का सयोग करना चाहिये, वे इस प्रकार हैं:—

१ राशि, २ योनि, ३ गण, ४ नाडी और ५ वर्ग, ये पांच शुद्धिया वर में देख कर कन्या देनी चाहिये। इसके सिवाय जो कन्या रजस्वला होती है उसका विवाह शाघ्र होना चाहिये। अच्छे वर को देख कर ऐसी कन्या का विवाह शीघ्र से शीघ्र ही कर देना उचित है।

वाग्दान (सगाई) की रीति

उपरोक्त लक्षण देखने के बाद सगाई होती है। वाग्दान [सगाई] की रीति इस प्रकार है। प्रथम शुभ

दिन, शुभ मास, शुभ नक्षत्र में शुभ मुहूर्त देख कर एक तिथि निश्चय करना चाहिये, निश्चित की हुई तिथि के रोज निश्चित की हुई जगह पर दोनों सम्बन्धी तथा मित्र और कुटुम्बीगण इकट्ठे हो जांय। बाद में कन्या का पिता वाग्दान [सगाई] सम्बन्ध जोड़ते समय नीचे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करे :—

वाग्दान (सगाई) का मन्त्र

ॐ अर्हं परम सौभाग्याय परम सुखाय परम भोगाय परम धर्माय परम यशसे परम-सन्तानाय भोगोपभोगांतराय व्यवच्छेदाय इमा अमुक नाम्नी कन्या अमुक गोत्राय अमुक नाम्ने वराय ददाति प्रति गृहाण अर्हं ॐ स्वाहा ॥ १ ॥

इसके बाद जैन याचक को दान दे। जिस देश की जो रीति हो वो करे। परन्तु सगाई करते समय इसी माफिक रस्म हो। बाद में लग्न मुहूर्त देखना चाहिये।

❀ विवाह मुहूर्त ❀

नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, उत्तराषाढा, उत्तरा भाद्रपद

और रेवती ये नक्षत्र लेने चाहिये। परन्तु लता, पात, एकार्गल, वेध, उपग्रह आदि दोष नहीं होने चाहिये। नक्षत्र गण्डान्त, तिथि गण्डान्त, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति आदि खोटे काल को भी बचा कर मुहूर्त शोधना चाहिये और क्रान्तिसाम्य, दग्धा तिथि, अधिक मास, चौमासा आदि भी छोड देने चाहिये। बढी हुई तिथि, घटी हुई तिथि, रिक्ता तिथि, अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी और अमावस्या इन तिथियों को त्याग देना चाहिये तथा २–३–५–७–१०–११–१३–१५ ये तिथियें लेना शुभ है। सिंह का गुरु हो, धन, मीन का सूर्य हो, गुरु शुक्र का अस्त हो गया हो उस समय विवाह, दीक्षा तथा प्रतिष्ठा आदि करना अच्छा नहीं। सक्रान्ति के दिन तथा उसके दूसरे दिन, ग्रहण के रोज और उसके बाद में ७ रोज तक विवाह करना मना है। जन्म लग्न, जन्म वार, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि और जन्म मास में भी विवाह करना मना है। जन्म लग्न का स्वामी अस्तगत हो या क्रूर ग्रह करके पराजित हो उस समय भी विवाह करना अच्छा नहीं। जन्म राशि से और जन्म लग्न से आठवें लग्न में विवाह होना नेष्ट है। बुध, गुरु, शुक्र इनमें से कोई भी हो तो अच्छा है। स्थिर, धी-स्वभाव या चर इनमें से कोई भी लग्न हो तो अच्छा है।

हों, उत्पात आदि दोष करके रहित हो और लग्न शुद्धि में उत्तमता जरूर देखनी चाहिये।

विवाह लग्न को उदय शुद्धि और अस्त शुद्धि भी अच्छे लोग जरूर देखते हैं। लग्न का स्वामी और लग्न के नवांश का स्वामी नवांश को देखता हो या नवांश के युक्त हो उसको उदय शुद्धि बोलते हैं। सप्तम नवांश का स्वामी सप्तमांश को देखता हो या सप्तम नवांश के युक्त हो तो उसको अस्त शुद्धि कहते हैं। लग्न दो पाप ग्रहों के बीच में होना अच्छा नहीं। चंद्रमा भी दो पाप ग्रहों के बीच में या पाप ग्रहों करके दृष्ट होना ठीक नहीं। लग्न में शुभ ग्रहों का नवांश हो और शुभ ग्रह देखते हों ऐसे लग्न पर विवाह करना अच्छा है। सूर्य ३-६-१० वें भवन में हो तो अच्छा है। चंद्रमा १-६-८ भवन को छोड़कर अन्य भवनों में होना ठीक है। मंगल ३-६ भवन में होना अच्छा है। बुध १-२-४-५-६-८-१० भवन में होना ठीक है। गुरु १-२-५-७-९-१० भवन में होना श्रेष्ठ है। शुक्र १-५-६-१० भवन में होना शुभ है। शनि ३-६ भवन में होना उत्तम है। ११ वें भवन में सभी ग्रह अच्छे हैं। तीसरे भवन में राहु हो और ५ वें भवन में कोई पाप ग्रह न हो तथा सप्तम भवन में शुभाऽशुभ ग्रहों में से कोई भी नहीं होना ऐसे लग्न पर विवाह का

मुहूर्त शोधना चाहिए। स्त्री के वास्ते वृहस्पति का बल और पुरुष के लिए सूर्य का बल तथा वर कन्या दोनों के लिये चंद्र का बल देखना चाहिये। यदि ऐसा शुद्ध बलवान् लग्न न मिले तो फिर सामान्य दिन शुद्धि देख लेना चाहिये और चंद्र स्वर चलते समय विवाह कार्य में प्रवृत्त होना चाहिये। बरात चढते वक्त भी चंद्र स्वर जरूर लेना चाहिये, तथा तोरण छूते वक्त भी चंद्र स्वर लेना चाहिये। चंद्र स्वर अमृत नाडी कही गई है। इसमें गृहस्थ धर्म के जितने स्थिर और प्रभावशाली कार्य हों उतने ही अच्छे होते हैं। जिस पुरुष का विवाह अच्छे लग्न या चंद्र स्वर में नहीं हुआ उसको अपनी स्त्री से प्रेम नहीं रहता है तथा और भी अनेकों विघ्न आते हैं। अगर लग्न कमजोर भी हो परन्तु चन्द्र स्वर हो तो कोई भय नहीं वह मुहूर्त अच्छा है। हस्त मिलाप की वक्त भी चंद्र स्वर जरूर ही होना चाहिए। यदि कोई प्रश्न करे कि चंद्र स्वर सारी रात न आया तो फिर कैसे होगा? जवाब-स्वर घण्टे २ में बदलता है। विवाह का मुहूर्त मुकर्रर हो जाय उसके बाद एक पत्र लिखते हैं, जिसे "लग्न पत्रिका" कहते हैं सो अब उसको लिखने की रीति बताते हैं।

लग्न पत्रिका का आदर्श [नमूना]

यस्य। प्रौढ तमः। प्रताप तप नः। प्रोद्योत धामा

जगत्। ज्वाल' कलिकालकेलि दहनो मोहान्ध-विध्वंशक' ॥ नित्यो द्योतिपद समस्त कमला केलिगृह राजते । स. श्री, पार्श्वजिनोजने हित कृतौ चिन्तामणिः पातु माम् ॥ १ ॥

आदित्यादि ग्रहाः सर्वे, नक्षत्राणि च राशय.॥
दीर्घमायुःप्रकुर्वन्तु यस्यैपा लग्न पत्रिका ॥ २ ॥

श्री शुभ संवत् ———— मासाना मासोत्तमे मासे [अमुक] मासे [अमुक] पक्षे [अमुक] तिथौ [अमुक] वासरे [अमुक] नक्षत्रे [अमुक] लग्ने [अमुक] नाम्नो वर कन्यायो' शुभ सुमङ्गल भवतु ।

अनन्तर जिस लग्न में फेरा आदि कार्य निश्चित हो उसकी कुण्डली भी लग्न पत्रिका में होनी चाहिये ।

इस लग्न पत्रिका की दो प्रतियाँ होरे एक प्रति लडकी वाला अपने पास रक्खे और दूसरी प्रति लडके वाले को देते हुए नीचे लिखा हुआ मन्त्र पढे ।

लग्न पत्रिका का मन्त्र

सर्वे ग्रहा दिनकर प्रमुखाः स्वकर्म, पूर्वो पनीत फल दान करा जनानाम् ॥ पूजोपचार

निकर स्वकरेपु लात्वा, सत्वागताः सपदि तीर्थकरां च नेत्र ॥

धर्मेण हन्यते व्याधिः धर्मेण हन्यते ग्रहाः ।
धर्मेण हन्थते शत्रुः यतोधर्म स्ततोजयः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आदित्य सोम मंगल बुद्ध वृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सर्वे समीहित शांति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि दधतु । इमां अमुक नाम्नी कन्या अमुक नाम्ने वराय ददाति प्रति गृहाण । अर्हं ॐ स्वाहा ॥

उपर्युक्त मंत्र पढकर लग्न पत्रिका को केशर तथा रोली छिडक कर और मोली से बाँध कर लडके के पिता को अथवा और कोई उसके कुटुम्ब में मान्य पुरुष हो उसको दे। वर पक्ष वाले श्रीफल बादाम तथा अन्य फलादि सर्व मांगलिक के लिए यथाशक्ति लग्न पत्रिका लाने वाले को देवे और तदनन्तर सब को दे। पूर्वोक्त लग्न पत्रिका के अनुकूल सर्व कार्य करे।

* चाक नूतन *

विवाह के पहले अंदाजन पनरा दिन या कुछ कम रहे हों तब ""हागण स्त्रियाँ कुंभकार (कुम्हार) के

घर जावे या चाक वगैरा अपने घर से कुछ दूर योग्य स्थान पर मगाकर रखे। उस स्थान पर बाजे-गाजे के साथ चाक को नौते (पूजा करे)। चार मगल कलश लाल रग के (काले दाग न होना चाहिये) लावे। ये मिट्टी के घडे मगलीक माने हैं कारण ऋषभदेव भगवान ने पहले यही बनाया है। ये मगल कलश योग्य एकात स्थान में रक्खें।

जिस दिन लग्न पत्रिका द्वारा विवाह का शुभ मुहूर्त तथा विवाह का आरभ दिन निश्चित हुआ हो उस दिन से मांगलिक कार्य शुरु होता है जिसमें पहले मातृका स्थापन करे। कई प्रान्तों में यह भी रिवाज है कि विवाह के प्रारभ में वर कन्या को बदोले बैठाते हैं अर्थात् बाने बैठाते हैं, उसी दिन से वर कन्या के घरों में बाजे गाजे शुभ माङ्गलिक गीत गान हुआ करते हैं।

अब यहाँ पर मातृ का स्थापन विधि और मत्र लिखते हैं।

मातृ स्थापना * [भाषा]

लग्न के पहिले ३–५–७ या नव दिन पेश्तर तथा लग्न के दिन ही शुभ मुहूर्त में वर कन्या दोनों के यहाँ मातृका

---

* नोट—मातृका याने जाति और गोत्र की देवी की स्थापना करनी चाहिये। एव जो पूर्वाचार्योंने तथा "आचार दिनकर" सूत्र

की स्थापना करें। जाति कुल के रिवाज के अनुसार १ पट्टे पर गोत्र देवी की स्थापना करते समय "ॐ आधाराय नमः आधार शक्तये नमः आसानाय नमः।" इस मंत्र को सात बार पढ़ कर फिर "ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणि अमृत वर्षय २ स्वाहा।" इस मंत्र को पढ़ कर कुंकुम चन्दन अक्षत से पट्टे पर अभिषेक करे। उसके बाद स्थापना करके अष्ट प्रकारी पूजा करे।

मातृ पूजा का मंत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवती, ब्रह्माणि, वीणा पुस्तक पद्माक्ष सूत्र करे हंसवाहने श्वेतवर्णे इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ स्वाहा॥

यह मंत्र पढ़ कर पुष्पों से मातृकाओं का आह्वान करे।

सन्निधान का मंत्र

ॐ ह्रीँ भगवती, ब्रह्माणि वीणा पुस्तक

के कर्त्ताओं ने अपनी गोत्र देवियों का फरमान कर दिया है, उन्हीं में से गोत्र देवी की स्थापना करनी चाहिये। अपनी वे ही माताएँ हैं इन्हीं की पूजा करनी चाहिये परन्तु अन्य धर्म के जो रिवाज जैनों के विवाहों मे होते हैं उन रिवाजों को बन्द कर देना चाहिये। अपने जैन रिवाजों के अनुसार विनायक की स्थापना की विधि इसी पुस्तक में आगे लिखेंगे।

पद्माक्ष सूत्र करे हस वाहने श्वेतवर्णे मम सनि-
हिता भव २ स्वाहा ॥

इस मत्र को ३ वार पढ कर सन्निधान करे।

स्थापना मत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति ब्रह्माणि वीणा पुस्तक पद्माक्ष सूत्र करे हसवाहने श्वेतवर्णे इह तिष्ठ २ स्वाहा ॥

इस मत्र को ३ वार पढकर पट्टे पर पुष्पाजलि और वासक्षेप से स्थापना करे।

चन्दनादि चढाने का मत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति ब्रह्माणि वीणा पुस्तक पद्माक्ष सूत्र करे हसवाहने श्वेतवर्णे गन्धँ गृहण २ स्वाहा ॥

इस मत्र से चन्दन पुष्प धूप दीप अक्षत नैवेद्य फल आदि ग्रह २ कह करके सर्व द्रव्य चढावे।

इसी प्रकार और सात माताओं की पूजन वगैरा करना उनके जुदे २ मत्र यथाक्रम नीचे दिये जाते हैं।

दूसरी माता का मंत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति माहेश्वरि, शूल-पिनाक कपाल खट्वांग करे, चन्द्रार्ध ललाटे, गजचर्मा वृते शेषाहि वद्ध काची कलापे, त्रिनयने वृषभवाहने, श्वेतवर्णे इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ स्वाहा ॥ २ ॥

तीसरी माता का मंत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति कौमारि षण्मुखि शूल शक्ति धरे, वरदाऽभय करे, मयूरवाहने, गौर वर्णे, इह विवाह महोत्सवे, आगच्छ २ स्वाहा ॥३॥

चतुर्थ माता का मंत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति, वैष्णवि, शंखचक्र गदा शारङ्ग खड्ग करे गरुड़ वाहने कृष्ण वर्णे इह विवाह महोत्सवे आगच्छः २ स्वाहा ॥४॥

पंचमी माता का मन्त्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति, वाराहि, वाराह मुखि, चक्र खड्ग हस्ते गरु वाहने श्याम वर्णे, इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ स्वाहा ॥५॥

षष्ठी माता का मन्त्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति, इन्द्राणि, सहस्र नयने, वज्र हस्ते, सर्वाभरण भूषिते, गज वाहने, सुरांगना कोटि वेष्टिते, कांचन वर्ण इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ स्वाहा ॥६॥

सातवीं माता का मंत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति चामुण्डे गिराजाल-कराल शरीरे, प्रकटित दशने, ज्वाला कुन्तले रक्त त्रिनेत्रे, शूल कपाल खड्ग प्रेत कृत करे, प्रेत वाहने धूम्र वर्णे इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥

अष्टमी माता का मंत्र

ॐ ह्रीँ नमो भगवति त्रिपुरे पद्म पुस्तक-

वरदाभय करे, सिंह वाहने श्वेतवर्णे इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ स्वाहा ॥८॥

ऊपर लिखे हुए अवशिष्ट सात माताओं के मंत्रों से सात माताओं का आह्वान, सन्निधान, स्थापना, द्रव्यादि चढाना आदि भी तत्तन्माता के मंत्र से करे। परन्तु जो जो कार्य करना हो उसे उसी मंत्र के शेष में वर्ण के उच्चारण करने के बाद उसी कार्य का नाम लेके करे। फिर हाथ जोड कर स्तुति करे, सो लिखते हैं।

स्तुति मंत्र

ॐ ब्रह्माद्याः मातरोऽप्यष्टौ, स्व स्वाऽस्त्र बल वाहनाः। पष्टि संपूजनात्पूर्वं कल्याण ददतां शिशोः ॥ १ ॥

इत्याद्युक्त मातृपूजा के पश्चात् उसके आगे पृथ्वी पर चंदनादि से आगा रूप पष्ठिदेवी की स्थापना करे और उसकी दधि चदन अक्षत आदि से पूजा करे सो अब उसका मंत्र लिखते हैं।

पष्ठी देवी का मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं पष्ठि, आम्रवनवासिनी, कदंत्र वन विहारिणि,पुत्रद्वय युते, नर वाहने, श्यः

२३ विवाह महोत्सवे आगच्छ २ स्वाहा ॥२॥

इसी तरह से मातृका पूजा की विधि की गई पहिले देवी का भी आह्वान शान्ति करें।

विनायक देव की स्थापना का वर्णन कर।

मातृ स्थापना के दिन ही जवारों के पात्र स्थापने की स्थापना करना तथा उनमें जौ, धान बोना चाहिए और इसी रोज कंकण डोरा बांधना चाहिए।

विवाह के दिन का कार्य

॥ मण्डप (मांडवा) मुहूर्त ॥ (चँवरा)

मण्डप मुहूर्त यही कर्म का स्तम्भ मुहूर्त है इसकी विधि "आचार दिनकर" ग्रन्थ में नहीं है। परन्तु श्री आदिनाथ चरित्र में विवाह मण्डप का वर्णन किया हुआ है। यहाँ मण्डप के भीतर की वेदी का और चँवरा का वर्णन है। जो वेदिका की स्थापना विधि "आचार दिनकर" ग्रन्थ में है। लग्न तथा प्रतिष्ठा महोत्सव समये अपने मांडवा मुहूर्त करते हैं वह इसी प्रकार होता है। पर घर में घर मांडवा मुहूर्त नहीं होता है। कारण जहाँ पर लग्न हो! वहीं पर मंडप चँवरी आदि का मुहूर्त होता है और उस जगह कर प्रतिष्ठा समान करने में कोई हरकत नहीं। लग्न के दिन मण्डप मुहूर्त करना सर्व श्रेष्ठ है।

चँवरी गाँधने योग्य ४-६-८-१० हाथ सम चौरस जैसी अनुकूल हो वैसी ही जगह पर बाँधनी चाहिये। घर के बाहिर शुद्ध कराकर चँवरी गाँधनी चाहिये। कई एक देशों में घर के भीतर चँवरी का कार्य करते हैं, यह देशारूढ़ि चाल है। चँवरी गाँधने के समय कन्या का पिता पत्नी सहित पूर्वाऽभिमुख होके पट्टा पर बैठे तथा उसके साथ ४ पुरुष दूसरे जिनकी शादी हो गई हो, बैठें। उस दिन वृषभ, मिथुन या कर्क की शंक्राति हो तो अग्नि कोण में चँवरी का खाड़ा खोदें। सिंह, कन्या या तुला की शक्राति हो तो ईशान कोण में खोदें, वृश्चिक, धन या मकर की शक्रांति हो तो वायु कोण में खोदें, कुम्भ, मीन और मेष की शंक्राति हो तो नैऋत्य कोण में खाडा खोदें तदनन्तर बाकी के खाडे खोदें और मडप के चारों कोणों पर चँवरी याने छोटे मोटे घडो की स्थापना करे सबसे बडा घडा सब के नीचे और सबसे छोटा घडा सब के ऊपर यों ऊपर नीचे ७ घडे क्रमवार रखें और उनकी तीनों बाजू बाँस बाँधे। चँवरी के चारों तरफ तोरण बाँधे, ऊपर लाल वस्त्र बाँधे, सुन्दर कपडे का चँदूवा बाँधे और चवरी बाँधने वाले को दान अवश्यमेव देना चाहिए। चँवरी के बीच में कच्ची ईंटों की वेदी और हवनकुण्ड बाँधना चाहिये। [illegible] के बाँधने का आकार आगे

लिखेंगे। कदाचित् स्थान का संकोच हो तो आगे लिखे हुए माप से लोगों में वेदी बनावें। अब वेदिका की स्थापना के समय पढ़ने का मन्त्र लिखते हैं।

वेदी स्थापना का मन्त्र

ॐ नमः क्षेत्र देवताये विवाह श्रां श्रीं श्रूं श्रौं इह विवाह मण्डपे आगच्छ २। इदं बलि परिभोग गृहाण २। भोगंदेहि। सुखंदेहि। यशोदेहि। सन्तति देहि। ऋद्धि देहि। वृद्धि देहि। सर्व समीहितं देहि २ स्वाहा॥

इस मन्त्र से वेदी की स्थापना करे, चारों तरफ तोरण बाँधे। परन्तु वेदी की स्थापना करते समय पुष्प, अक्षत, चन्दन या कुंकुम (लाल रंग) ये तीनों वस्तु हाथ में लेकर ऊपर का मन्त्र पढ़कर जो जो सामग्री ली हो, उसे वेदी के चारों तरफ चढ़ावे, [illegible] पुष्पमाला चढ़ावे। कदाचित् हवनकुण्ड खोदने के लिए स्थान की सगवड़ न हो तो रेत की चौतरी बांधे। ऊपर कुंकुम, सिन्दूर हल्दी और चावलों की आकृति से शृंगार करे, यह सब विधि कन्या के घर होती है।

अब वर के घर से वर सज कर मंडप पर आवे, तब क्या क्या करना सो लिखते हैं।

जिस दिन विवाह के लिये बारात सहित लड़का विवाह को चढ़ता है उस रोज लड़के को मेंहदी, और उबटन प्रभृति से स्नान आदि कराके शुद्ध वस्त्र से शरीर साफ कर तैल, इत्र आदि सुगन्धि पदार्थ लगा कर मस्तक में तिलक लगावें विवाह के वस्त्र, जामा और उत्तरासन वगैर स्वाक पगड़ी पहिनाने के बाद मुकुट बँधावें। मुकुट बाँधने का समय आने पर शुद्ध चाँदी का या सुवर्ण का मुकुट या समयाऽनुकूल जैसा मिल सके उस, मुकुट को सब से प्रथम तो एक चौकी पर रक्खें और उसका पूजन करने के लिए प्रथम हाथ में जल लेकर नीचे लिखा हुआ मंत्र पढ़ कर मुकुट शुद्धि करें अर्थात् जल से उसे धोवें या छींटा दक पवित्र करें।

मुकुट (मौड़) शुद्धि का मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा। ध्यायेत पञ्चनमस्कार, सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥

उपर्युक्त मंत्र से मुकुट (मौड) शुद्धि कराके केशर, चंदन, पुष्प आदि हाथ में लेकर मुकुट पूजा करे और पुष्पों से मुकुट को श्रेष्ठतया सुसज्जित करे (सिणगारें)। अतः शृंगार का मंत्र लिखते हैं।

मुकुट (मोड़) पूजा का मंत्र

ॐ अपवित्र-पवित्रोवा, सर्वावस्था गतोऽपिवा । य. स्मरेत् परमात्मान स. वाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः ॥ १ ॥

इतना कह कर फिर मुकुट को शृंगार दे। बाद में मुकुट बाँधने का मंत्र बोल कर मुकुट को बाँधें। बाँधने का मंत्र यह है.—

मुकुट (मौड़) बाँधने का मंत्र

प्रथम तीन नमस्कार (नवकार) मंत्र पढ़ कर बाद में यह मुकुट बन्धन मंत्र पढ़ना चाहिये।

मङ्गल भगवान् वीरो, मङ्गल गौतमः प्रभु. ।
मङ्गल स्थूलभद्राद्याः जैन धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥१॥
सर्व मङ्गल माङ्गल्य, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधान सर्व धर्माणा, जैन जयति शासनम् ॥२॥

यह मंत्र पढ़ कर फिर जो मुकुट (मोड) पुष्पों द्वारा सजा हुआ है उसको शिर पर बाँधें, इस प्रकार शिर पर मुकुट धारण करके अच्छे २ आभूषण और वस्त्रों से सुसज्जित होकर घोडी या हथनी पर तीन नमस्कार

(नवकार) मंत्र पढ करके बैठें। बाद में वर के आगे आगे गाजे बाजे, झण्डा, फरियें, छत्र आदि समग्र राजसी ठाट होना चाहिये। साथ में सब बिरादरी वाले सुसज्ज होकर बारात में शामिल होवें तथा उस समय अवश्य करके जैनी याचकों को दान देवें।

विवाह विधि पढाने के लिए कोई जैन श्वेताम्बरी पण्डित या कोई अपनी जाति का ही अच्छा पढा हुआ शुद्ध उच्चारण करने वाला विद्वान् हो। उसे उस समय जहां से बारात आरम्भ हो; नीचे लिखा हुआ शान्ति मत्र पढना चाहिए। ताकि मार्ग में किसी बात की अशान्ति न हो और लग्न का कार्य सानन्द शुरू हो जाय। तथा उस दिन से दोनों टाइम हमेशा शान्तिपुष्टि के लिए सातिस्मरण और ग्रहशान्ति का पाठ कराना चाहिये। कदाचित उस रोज कोई अच्छे पण्डित का सहयोग न मिल सके तो जिस दिन बारात चढे उस दिन से लेके बारात पीछी आवे वहाँ तक तो जरूर कराना चाहिये।

शान्ति मत्र

ॐ अर्हं आदिमो अर्हन् । आदिमो नृपः आदिमो दाता । आदिमो नियन्ता। आदिमो गुरुः। आदिम [illegible] । आदिमो भर्त्ता । आ[illegible]

दिमो जयी। आदिमो नयी। आदिम. शिल्पी। आदिमो विद्वान्। आदिमो जल्पक.। आदिमः शास्ता। आदिमो रौद्रः। आदिमः सौम्यः। आदिमः काम्यः। आदिम. शरण्य.। आदिमो दाता। आदिमो वद्य.। आदिमः स्तुत्यः। आदिमो ज्ञेय.। आदिमो ध्येय.। आदिमो भोक्ता। आदिम. सोढा। आदिम एकः। आदिमोऽनेकः। आदिम. स्थूलः। आदिमः कर्मवान्। आदिमः कर्मा। आदिमो धर्मवित्। आदिमोऽनुष्ठय। आदिमोऽनुष्ठाता। आदिम सहज। आदिमो दशावान्। आदिम सकलनः। आदिमः कुशल। आदिमो निवोढा। आदिम स्थापक। आदिमो ज्ञापक। आदिमो विदुर। आदिम कुशल। आदिमो वैज्ञानिक। आदिम सेव्य। आदिमो गम्य। आदिमोविमृश्य। आदिमोविमृष्ट। सुरासुर नरोर गणातः प्राप्त विमल केवलो योगीयते।

सकल प्राणगणहित । दयालुः। परोपेक्षा रहित.। परमात्मा। पर ज्योति । पर ब्रह्म । परमैश्वर्यभाक् । पर पर.। अपरं पर.। जगदुत्तमः। सर्वग.। सर्ववित्। सर्वजित्। सर्वीय सर्व प्रशस्य.। सर्व वद्य । सर्वपूज्य । सर्वोत्तमः संसारे । अव्ययोऽवार्य वीर्य । श्रीरुश्रय.। श्रेयः सश्रयः। विश्वावशाय हित सराय दूतः। विश्वसारो। निरजनो। निर्गमो। निष्कलङ्को। निष्पापो। निपुण्य। निर्मना। निर्देही। निस्संशय'। निराधारोऽवधि प्रमाण'। प्रमेय.। प्रमाता। जीवाजीवाश्रव सवर निर्जराबध मोक्ष प्रकाशकः। स एव भगवान् शान्ति करोतु। तुष्टि करोतु। पुष्टि करोतु। ऋद्धि करोतु। वृद्धि करोतु। सुख करोतु। सौख्य करोतु। लक्ष्मी करोतु। अर्ह ॐ स्वाहा॥

इस तरह मंत्र पढ कर बारात चलती हुई जिन मन्दिर तथा जैन पास जाकर नमस्कार करें एवं

बाद में वहां से आगे बढे। बारात सहित जब वर तोरण छूने को जावे उस समय कन्या का पिता सर्व सज्जनों को साथ में लेकर सामने आवे और वर पक्ष वालों से मिलणी करे। याने कन्या का पिता और वर का पिता आपस में स्वजन मिलाप करें।

इस तरह मिलनी होने के बाद बरात सहित वर सुसराल की तरफ आगे बढे और तोरण के पास जावे और दाहिने (जीमणे) हाथ से तलवार के जरिये तोरण स्पर्श करते समय नीचे लिखा मंत्र पढे।

तोरण वन्दन मंत्र

ॐ ह्रीँ नमो द्वार श्रिये, सर्वपूजिते, सर्व मानिते, सर्व प्रधाने, इह तोरणस्था सर्व समीहित देहि २ स्वाहा ॥

इस मंत्र को पढ़ते हुए तोरण का स्पर्श करे, तथा उस वक्त गाजे बाजेवालों को और याचकों को दान देना चाहिये। अच्छे पुरुषों का यही काम है कि जिस समय अपने को खुशी हो उस समय दूसरे को भी खुश. चाहिए।

पूंखणा विधि

जब बारात सहित वर कन्या के मण्डप द्वार पर जावे, तब वहाँ सासु आकर कपूर और दीपक लेके वर की आरती करे। और दूसरी स्त्री मिट्टी के प्याले में अग्नि रख कर उस वर के ऊपर से नमक उतार कर अग्नि में डाल दे और उस प्याले को वर की बाई बाजू रख दे। बाद में सासू एक कोरा मिट्टी का घडा और कुंकुम आदि तिलक करने की सामग्री लेकर सामने आवे और वर को तिलक करे। उस समय वर उस घडे में रुपया या मोहर वगैरा डाले। और मथान, हल, मूसल, धूसर तथा चरखे की त्राक से वर को पोखे। अर्थात् इन चीजों को लाल वस्त्र में लपेट कर अलग अलग तीन दफे वर के मस्तक तक फिराती हुई उतारे। ये चीजें बहुत छोटी छोटी इसी काम के लिए बनी हुई रहती हैं कि वर सूचित हो जावे कि वह पूरी तरह गृहस्थ काम में प्रवेश कर रहा है और उसमें उसे रहना पडेगा।

इस प्रकार आज्ञा होने के बाद अन्दर प्रवेश करे, तथा अन्दर प्रवेश करते वक्त वर उस प्याले को (जिसमें अग्नि है और नमक उतार कर डाला गया था) अपने बाँये पैर से छू करके आगे चले। आगे चल कर जहाँ मातृ स्थापना की गई हो वहा पर जाकर बैठे।

वर जब कन्या के घर पहुँचे, उसके पहले कन्या को तैल, पीठी मर्दन कर स्नान कराने अच्छे वस्त्र, आभूषण वगैरे पहना के चूड़ा धारण करावे, तदनन्तर कुंकुम का तिलक करावे, अक्षत चढावे, आंख में कजल आँज के, इस तरह सुहागिन का सर्व सुन्दर शृगार कराके पीछे गोत्र जन का दर्शन करावे, तथा पूजन कराके मातृ गृह में १ पट्टे पर पहले ही से बैठा देवें। वर को कन्या के बाँई (डावीं) तर्फ मातृ स्थापना के सामने बैठा दे।

विवाह विधि

सप्त कुलगर की स्थापना

अब वर के हाथ से कुलगर की स्थापना करावे, सो इस तरह की सोना चाँदी या काष्ठ के पट्टे पर स्थापना करने के वक्त "ॐ आधाराय नम आधार शक्तये नम आसानाय नम।" इस मंत्र को सात बार पढ कर फिर "ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षिणी अमृत वर्षय २ स्वाहा।" इस मंत्र को पढ कर कुंकुम, चन्दन, आदि से पट्टे का अभिषेक करे याने उसकी पूजा करे और उस पर इस तरह ० ० ० ० सात पूंज चावल की बनावें। फिर एक एक पूंज पर एक एक कुलगर का मंत्र

पढ़ कर उनकी स्थापना करे। कुलगरों की पूजा सामग्री—श्रीफल, जल, चन्दन, पुष्प, तथा पुष्पमाला, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, वस्त्र, नगदी रूपानाणो ये वस्तुएँ चाहिये। और यह सब सामग्री इकट्ठी करके एक थाल में रक्खे, फिर एक एक चावल की जो पूजा की हुई है उन पर एक एक पान रख कर उस पान पर केशर, चन्दन का तिलक करे और एक पुष्प तथा पुष्पमाला चढावे और जरा से चावल, एक मिठाई का नग, एक फल, एक वस्त्र सवा गज का और एक नगदी रूपानाणो इस तरह उपर्युक्त सर्व सामग्री पान पर सजा कर रखदे। एक जल का कलश तथा केशर की कटोरी हाथ में लेकर खड़ा रहे। धूपदान में धूप गेर दे और अखण्ड दीपक जला दे। इस प्रकार एक एक मंत्र पढ कर हर एक कुलगर पर उपर्युक्त सामग्री चढावे, परन्तु सामग्री चढाने के प्रथम कुलगरों का स्थापना मंत्र पढना चाहिये अतः नीचे मंत्र लिखते हैं।

प्रथम कुलगर का मंत्र

ॐ नमो प्रथम कुलगराय, काञ्चनवर्णाय, श्याम-वर्ण चन्द्रयशा प्रियतमासहिताय, हक्कार मात्रोच्चार स्थापित न्याय पथाय विमल वाहनाभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह

तिष्ठ २, सन्निहितोभव क्षेमदोभव, उत्सवदोभव, आनन्ददोभव, भोगदोभव, कीर्त्तिदोभव, अपत्य सन्तानदोभव स्नेहदोभव राज्यदोभव। इहैव जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरते अमुक नगरे, अमुक स्थाने, इदमर्घ्यं पाद्य, चरु आचमनीय, गृहाण २ ततश्च ॐ जल नम, ॐ गन्ध नम, ॐ पुष्प नम., ॐ धूप नम॰, ॐ दीप नम, ॐ अक्षत नम, ॐ नैवेद्य नम ॐ फल नम., ॐ उपवीत नम, ॐ भूषण नम, ॐ ताम्बूल नमः, ॐ वस्त्र नम, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा॥

द्वितीय कुलगर मन्त्र

ॐ नमः द्वितीय कुलगराय, श्यामवर्णाय, चन्द्रकान्ता प्रियतमा सहिताय हकार मात्रोचार स्थापित न्याय पथाय चक्षुष्मानभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ठ २ सन्निहितोभव क्षेमदोभव, उत्सवदोभव, आनद दोभव भोगदोभव, कीर्त्तिदोभव, अपत्य-

सन्तानदोभव, स्नेहदोभव, राज्यदोभव, इहैव जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्धे भरते अमुक नगरे अमुक स्थाने इदमर्घ्यं, पाद्य, चरु आचमनीय गृहाण २ ततश्च ॐ जल नम, ॐ गन्ध नम, ॐ पुष्पं नमः, ॐ धूप नमः, ॐ दीप नम, ॐ अक्षत नम, ॐ नैवेद्य नम, ॐ फल नम, ॐ उपवीतं नमः, ॐ भूषणं नमः, ॐ ताम्बूल नम, ॐ वस्त्र नम, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा ॥

तृतीय कुलगर मन्त्र

ॐ नम. तृतीय कुलगराय श्याम वर्णाय, स्वरूपा प्रियतमा सहिताय हकार मात्रोच्चार स्थापित न्याय पथाय यशस्विन्नभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ठ २ सन्निहितो भव क्षेमदोभव उत्सवदोभव, आनन्ददोभव, भोगदोभव कीर्तिदोभव, अपत्यसतानदोभव, स्नेहदोभव, राज्यदोभव, इहैव जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्धे भरते अमुक नगरे अमुक

तिष्ठ २, सन्निहितोभव क्षेमदोभव, उत्सवदोभव आनन्ददोभव, भोगदोभव, कीर्त्तिदोभव, अपत्य सन्तानदोभव स्नेहदोभव राज्यदोभव। इहैव जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरत अमुक नगरे, अमुक स्थाने, इदमर्घं पाद्य, चरु आचमनीय, गृहाण २ ततश्च ॐ जल नम, ॐ गन्ध नम, ॐ पुष्प नम., ॐ धूप नमः, ॐ दीप नम, ॐ अक्षत नम', ॐ नैवेद्य नम ॐ फल नम., ॐ उपवीत नम, ॐ भूषण नमः, ॐ ताम्बूल नमः, ॐ वस्त्र नम, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा॥

द्वितीय कुलगर मत्र

ॐ नमः द्वितीय कुलगराय, श्यामवर्णाय, चन्द्रकान्ता प्रियतमा सहिताय हकार मात्राचार स्थापित न्याय पथाय चक्षुष्मानभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ठ २ सन्निहितोभव क्षेमदोभव, उत्सवदोभव, आनद दोभव भोगदोभव, कीर्त्तिदोभव, अपत्य-

सन्तानदोभव, स्नेहदोभव, राज्यदोभव, इहैव जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्धे भरते अमुक नगरे अमुक स्थाने इदमर्घ्यं, पाद्य, चरु आचमनीय गृहाण २ ततश्च ॐ जल नम, ॐ गन्ध नमः, ॐ पुष्पं नमः, ॐ धूप नमः, ॐ दीप नमः, ॐ अक्षत नम, ॐ नैवेद्य नमः, ॐ फल नमः, ॐ उपवीत नमः, ॐ भूषणं नमः, ॐ ताम्बूल नम, ॐ वस्त्र नमः, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा ॥

तृतीय कुलगर मत्र

ॐ नमः तृतीय कुलगराय स्याम वर्णाय, स्वरूपा प्रियतमा सहिताय हकार मात्रोच्चार स्थापित न्याय पथाय यशस्विन्नभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ट २ सन्निहितो भव क्षेमदोभव उत्सवदोभव, आनन्ददोभव, भोगदोभव कीर्त्तिदोभव, अपत्यनदोभव, स्नेहदोभव, राज्यदोभव, इहैव द्वीपे दक्षिणार्द्धे भरते अमुक नगरे अमुक

स्थाने इदमर्घ्यं, पाद्य चरु आचमनीय गृहाण २ ततश्च ॐ जल नमः, ॐ गन्ध नमः, ॐ पुष्प नमः, ॐ धूप नमः, ॐ दीप नमः, ॐ अक्षत नमः, ॐ नैवेद्य नमः, ॐ फल नमः, ॐ उपवीत नमः, ॐ भूषण नमः, ॐ ताम्बूल नमः, ॐ वस्त्र नमः, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा ॥

चतुर्थ कुलगर मन्त्र

ॐ नम चतुर्थ कुलगराय, श्वेत वर्णाय श्याम वर्ण प्रतिरूपाय प्रियतमा सहिताय मकार मात्रोच्चार स्थापित न्याय पथाय अभिचन्द्राभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ठ २ सन्निहितोभव क्षेमदोभव, उत्सवदोभव, आनन्ददोभव, भोगदोभव, कीर्त्तिदोभव अपत्य संतानदोभव स्नेहदोभव राज्यदोभव इदं २ जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरते अमुक नगरे अमुक स्थाने इदमर्घ्यं पाद्य चरु आचमनीय गृहाण २ ततश्च ॐ जल नमः, ॐ गन्ध नमः, ॐ पुष्प

नमः, ॐ धूप नमः, ॐ दीप नमः, ॐ अक्षतं नम , ॐ नैवेद्य नम., ॐ फल नम., ॐ उपवीत नमः, ॐ भूषण नम., ॐ ताम्बूलं नम., ॐ वस्त्रं नमः, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा ॥

पञ्चम कुलगर मन्त्र

ॐ नमः, पञ्चम कुलगराय, श्यामवर्णाय चक्षु कान्ता प्रियतमा सहिताय धिकार मात्रोच्चार ख्यापित न्याय पथाय प्रसेन जित् अभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ठ २ सन्निहितोभव क्षेमदोभव, उत्सवदोभव, आनददोभव, भोगदोभव, कीर्तिदोभव, अपत्यसतानदोभव, स्नेहदोभव, राज्य दोभव इहैव जवूद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरते अमुक नगरे अमुक स्थाने इदमर्घ्यं पाद्य चरु आचमनीय गृहाण २ ततश्च ॐ जल नमः, ॐ गन्ध नमः, ॐ पुष्पं नमः, ॐ धूप नमः, ॐ दीप नमः, ॐ अक्षतं

नमः, ॐ नैवेद्य नमः, ॐ फलं नमः, ॐ उप-
वीत नमः, ॐ भूषण नमः, ॐ ताम्बूलं नमः,
ॐ वस्त्र नमः, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा ॥

पष्ठ कुलगर मत्र

ॐ नमः पष्ट कुलगराय स्वर्णवर्णाय, श्याम वर्ण श्री कांता प्रियतमा साहिताय धिक्कार मात्रोच्चार स्थापित न्याय पथाय मरुदेवाभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ट २ सन्निहितो भव, क्षेमदोभव, उत्सवदोभव, आनददोभव, भोगदोभव कीर्त्तिदोभव, अपत्य-सतानदोभव, स्नेहदोभव, राज्यदोभव, इहैव जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरते अमुक नगरे अमुक स्थाने इदमर्घ्यं, पाद्य चरु आचमनीय गृहाण २ ततश्च ॐ जल नम., ॐ गन्ध नम', ॐ पुष्प नम , ॐ धूप नम , ॐ दीप नम , ॐ अक्षत नम', ॐ नैवेद्य नम ॐ फल नम., ॐ उप-

चीत नम:, ॐ भूषण नमः, ॐ ताम्बूलं नमः, ॐ वस्त्र नम, सर्वोपचारान् गृहाण २ स्वाहा॥

सप्तम कुलगर मंत्र

ॐ नमः सप्तम कुलगराय, कांचनवर्णाय, श्यामवर्ण मरुदेवा प्रियतमा सहिताय धिकार मात्रोचार ख्यापित न्याय पथाय नाभ्याभिधानाय इह विवाह महोत्सवे आगच्छ २ इह स्थाने तिष्ठ २ सन्निहितोभव, क्षेमदोभव, उत्सवदोभव, आनददोभव भोगदोभव, कीर्त्तिदोभव, अपत्य सन्तानदोभव, स्नेहदोभव, राज्यदोभव, इहैव जम्बूद्वीपे दक्षिणार्द्ध भरते अमुक नगरे अमुक स्थाने इदमर्घ्यं, पाद्य. चरु आचमनीय गृहाण २ ततश्च ॐ जल नम., ॐ गन्धं नम, ॐ पुष्प नमः, ॐ धूप नम., ॐ दीपं नमः, ॐ अक्षत नमः, ॐ नैवेद्य नमः, ॐ फल नम:, ॐ उप-

कौतुकागार की स्थापना का आकार







ऊपर बताए हुए प्रकार से सब की स्थापना कर लेनी चाहिए।

षोडश विद्यादेवी की स्थापना का मन्त्र

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला, वज्रांकुशी चक्रेश्वरी, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गौरी-

गाधरी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, घ्यच्छुसा, मानसी, महामानसी, एते विद्यादेव्य घ्यागच्छन्तु २ तिष्ठन्तु २ रक्षन्तु २ स्वाहा ॥

इतना पढ़ कर दीवाल पर १६ टीकी देवे फिर पुष्प अक्षत मोली आदि पूजा द्रव्य चढ़ा देवें।

अब जमीन पर किस २ की स्थापना करनी उसका पूरा खुलासा नीचे फिर कर देते हैं।

मंगल कलश २ ऊपर नीचे	ज्वारों के प्याले २ दोनों बाजू	स्थापना सप्तकुलगर का पट्टा १	ज्वारों का प्याला १	स्थापना शासन देवी का पट्टा	ज्वारों के प्याले २ दोनों बाजू	मंगल कलश २ ऊपर नीचे

काली महाकाली को कई लोग मिथ्यात्व श्रद्धा वाले मानते हैं, जिनको कि वे मांस मदिरा आदि चढ़ाते हैं, उनको यहां पर नहीं समझना चाहिए। ये देवियाँ ब्राह्मणी और रुद्राणी रूप से दो प्रकार की होती हैं जिनमें से यहाँ पर ब्रह्माणी को मानना चाहिए।

नोट—इन सब की स्थापना जमीन पर करनी। यह विधि यद्यपि आचार दिनकर सूत्र में नहीं है परन्तु "अभिधान चिन्ता-

रक्ष २, राक्षसेभ्यो रक्ष २, रिपुगणेभ्यो रक्ष २, मारिभ्यो रक्ष २, चोरेभ्यो रक्ष २, ईतिभ्यो रक्ष २, श्वापदेभ्यो रक्ष २, शिवं कुरु २, शांति कुरु २, तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं २, स्वस्ति कुरु २, भगवति, गुणवति, जनानां शिवशांति तुष्टि पुष्टि स्वस्ति कुरु २ ॐ नमो ह्रॉं ह्रीँ ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् स्वाहा ॥

इतना पढ़ कर विनायक यन्त्र की स्थापना के आगे पुष्प, अक्षत आदि चढ़ा देवें।

अनन्तर १ पट्टा पर दश दिग्पाल (लोकपाल) की स्थापना करे, सो बताते हैं—

हाथ में वासक्षेप और पुष्पाञ्जलि लेकर पहिले निम्न लिखित मन्त्र उच्चारण करे।

दश दिग्पाल स्थापना मन्त्र

ॐ इन्द्राग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुबेर शान नाग ब्रह्मणो लोक पालाः सविनायकाः सक्षेत्रपाला इह जिनपदाग्रे विवाह महोत्सवे समायान्तु पूजा प्रतीच्छन्तु ।

इतना पढ कर पट्टा पर वासक्षेप पुष्पाञ्जलि से लोकपालों की स्थापना करे तदनन्तर पूजा करे सो मंत्र लिखते हैं।

-पूजा का मंत्र

आचमनमस्तु, गन्धमस्तु, पुष्पमस्तु; धूपोऽस्तु, दीपोऽस्तु, अक्षता मन्तु, नैवेद्यमस्तु, फलमस्तु ॥

यह मंत्र पढता हुआ उपर्युक्त चीजें चढ़ा देवें बाद में अन पुष्पाञ्जलि चढावे, वह मंत्र लिखते हैं।

पुष्पाजलि का मत्र

ॐ ईन्द्राग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु कुबेरेशान नाग ब्रह्माणो लोकपाला सविनायकाः सक्षेत्रपालाः सुपूजिताः सतु, सानुग्रहाः सन्तु, तुष्टिदाः सन्तु, पुष्टिदाः सन्तु, मांगल्यदाः सतु, महोत्सवदाः सतु ॥

इतना पढ कर पुष्पाञ्जलि चढावे। इति लोक पाल पूजा, अन नवग्रह पूजा करें सो लिखते हैं।

एक पट्टा पर वासक्षेप और पुष्पाञ्जलि से नवग्रहों की स्थापना करे और नीचे लिखा मत्र पढ़े।

राहु ऋतून् सुराश्रासुर नाग सुपर्ण विद्युदग्नि-
द्वीपोदधि दिक् कुमारान् भुवनपालान् पिशाच-
भूत यक्ष राक्षस किंनर किंपुरुष महोरग गंध
र्वान् व्यंतरान् चन्द्रार्क ग्रह नक्षत्र तारकान् ज्यो
तिष्कान् सौधर्मेशान सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म-
लान्तक शुक्र महस्रारानत् प्राण तारणा च्युत
ग्रैवेयकानुत्तर भवान् वैमानिकान् इन्द्र सामानिक
पारप ्ंगा त्रयस्त्रिंश लोक पालक प्रकीर्णक
लौकान्तकाभि योगिक भेदे भिन्ना श्रतुर्णि-
कायानपि स्वभार्या मयुतान् मायुधवल वाह-
नान स्व स्वोपलक्षित चिह्नान् अवसरश्च परि-
गृहीताऽपरिगृहीत भेद भिन्ना स सरिसकाः
सदासिका. साभरणा रुत्वक् वासिनी दिक्
कुमारिकाश्च मर्वाः समुद्र नदी गिर्य्याकर वन
देवता स्तदेवान् मर्वान् सर्वाश्च इदमर्घ्यं पाद्य
माचमनीयवलि चरु हुत न्यस्त ग्राह्य २ स्वयं
गृहाण २ स्वाहा अर्हं ॐ ॥

- इतना पढ़ कर अग्नि की पूजा करे (जव, तिलादि होमे) बाद में हवन मंत्र पढ़े सो लिखते हैं।

हवन मंत्र

ॐ सत्यजाताय नमः १ ॐ अर्हज्जाताय नमः २ ॐ परम जाताय नमः ३ ॐ अनुपम जाताय नमः ४ ॐ स्व प्रधानाय नमः ५ ॐ अचलाय नमः ६ ॐ अक्षताय नमः ७ ॐ अव्या बाधाय नमः ८ ॐ अनन्त ज्ञानाय नमः ९ ॐ अनन्त दर्शनाय नमः १० ॐ अनन्त वीर्याय नमः ११ ॐ अनन्त सुखाय नमः १२ ॐ नीरजसे नमः १३ ॐ निर्मलाय नमः १४ ॐ अच्छेद्याय नमः १५ ॐ अभेद्याय नमः १६ ॐ अजराय नमः १७ ॐ अमराय नमः १८ ॐ अप्रमेयाय नमः १९ ॐ अगर्भवासाय नम. २० ॐ अक्षोभाय नम. २१ ॐ अविली नाय नम. २२ ॐ परम घनाय नमः २३ ॐ परम काष्ठाय नमः २४ ॐ लोकाग्र निवासिने

नमो नमः २५ ॐ परम सिद्धेभ्यो नमो नम २६ ॐ ग्रर्हत सिद्धेभ्यो नमो नम· २७ ॐ केवलि सिद्धेभ्यो नमो नम· २८ ॐ ग्रन्त कृत् सिद्धेभ्यो नमो नमः २९ ॐ परंपरा सिद्धेभ्यो नमो नमः ३० ॐ अनाद्यनुपम सिद्धेभ्यो नमो नमः ॐ सम्यग् दृष्टे ग्रासन्न भव्य निर्वाण पूजार्ह ग्रग्नीन्द्राय स्वाहा ॥ ३२ ॥

इस मत्र से ३२ आहुतियें देनी चाहिये।

पुनः हवन मत्र

ॐ सेवाफल षट् परम स्थान भवतु १ अपमृत्यु विनाशन भवतु २ समाधि मरणं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥

इस मत्र से ३ आहुति देनी चाहिये।

अथ जाति मत्र

अथ सत्य जन्मनः शरण प्रपद्ये १ अर्हज्जन्मन शरणं प्रपद्ये २ अर्हन्मातु. शरण प्रपद्ये ३ ग्रर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये ४ ग्रनादि गमनस्य

शरण प्रपद्ये ५ अनुपम जन्मनः शरणं प्रपद्ये ६ रत्न त्रयस्य शरण प्रपद्ये ७ ॐ सम्यग् दृष्टे ज्ञानमूर्ते सरस्वति स्वाहा ॥ ८ ॥

इस मंत्र से आठ आहुतियें देनी चाहिये।

काम्य मंत्र

ॐ सेवा फल षट् परम स्थानं भवतु १ अपमृत्यु विनाशन भवतु २ समाधि मरण भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥

इस मंत्र से तीन आहुतियें देनी चाहिये।

अथ निस्तारक मंत्र

ॐ सत्य जाताय स्वाहा १ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा २ ॐ षट् कर्मणे स्वाहा ३ ॐ ग्राम यतये स्वाहा ४ ॐ अनादि श्रोत्रियाय स्वाहा ५ ॐ स्नातकाय स्वाहा ६ ॐ श्रावकाय स्वाहा ७ ॐ देव ब्राह्मणाय स्वाहा ८ ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा ९ ॐ अनुपमाय स्वाहा १० ॐ सम्यग् दृष्टि निधिपति वैश्रवणाय स्वाहा ॥११॥

इस मंत्र से ग्यारह आहुतियें देनी चाहिये।

काम्य मंत्र

ॐ सेनाफल पट् परमस्थान भवतु १ अप-मृत्यु विनाशन भवतु २ समाधि मरण भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥

इस मंत्र से ३ तीन आहुतिएँ देनी चाहिए।

अप ऋषि मंत्र

सत्य जाताय नमः, १ अर्हज्जाताय नमः, २ निग्रंथाय नमः, ३ वीतरागाय नमः, ४ महाव्रताय नम, ५ त्रिगुप्तायनमः, ६ महायोगाय नमः, ७ विविध योगाय नम., ८ विवृद्धये नमः ॥ ६ ॥

इस मंत्र से नौ आहुतिएँ देना चाहिये।

पून मंत्र

अङ्ग धराय नमः १ पूर्व धराय नम. २ गण-धराय नम ३ परमर्षिभ्यो नम ४ अनुपम जाताय नम. ५ सम्यग् दृष्टे भूपते नगरपते काल श्रमण स्वाहा ॥ ६ ॥

इस मंत्र से छ आहुति देनो चाहिये।

काम्य मंत्र

सेवापद् परम स्थान भवतु १ अप मृत्यु विनाशन भवतु २ समाधि मरण भवतु ॥ ३ ॥

इस मंत्र से तीन आहुति देवे।

इस प्रकार कुल मिला कर ८० जिनमें १ अग्नि स्थापना की और १ अग्नि पूजा की अवशिष्ट ७८ हवन की सर्व ८० आहुतिएँ देनी चाहिये। अनन्तर आचार्य्य उठ कर वर के दक्षिण भाग में बैठी हुई कन्या के सामने खड़ा होकर कुश और तीर्थोदक लेकर अभिषेक मंत्र पढ़ता हुआ अभिषेक करे।

अभिषेक मंत्र

ॐ अर्हं इदं मानम मध्यासीनौ स्वध्यासीनौ स्थितौ सुस्थितौ तदस्तु वा सनातनः सगमः अर्हं ॐ ॥

इस तरह मंत्रोच्चारण पूर्वक वर वधू के ऊपर कुश और तीर्थोदक से अभिषेक करने के बाद आचार्य्य—

ॐ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः।

काम्य मत्र

ॐ सेवाफल षट् परमस्थान भवतु १ अप-मृत्यु विनाशन भवतु २ समाधि मरणं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥

इस मत्र से ३ तीन आहुतिएँ देनी चाहिए।

अथ ऋषि मत्र

सत्य जाताय नमः, १ अर्हज्जाताय नमः, २ निग्रथाय नमः, ३ वीतरागाय नमः, ४ महाव्रताय नमः, ५ त्रिगुप्तायनमः, ६ महायोगाय नमः, ७ विविध योगाय नमः, ८ विबुद्धये नमः ॥ ९ ॥

इस मत्र से नौ आहुतिएँ देना चाहिये।

पून मत्र

अङ्ग धराय नमः १ पूर्व धराय नमः २ गण-धराय नमः ३ परमर्षिभ्यो नमः ४ अनुपम जाताय नमः ५ सम्यग् दृष्टे भूपते नगरपते काल श्रमण स्वाहा ॥ ६ ॥

इस मत्र से छ आहुति देनी चाहिये।

काम्य मंत्र

सेवापट् परम स्थानं भवतु १ अप मृत्यु विनाशन भवतु २ समाधि मरणं भवतु ॥ ३ ॥

इस मंत्र से तीन आहुति देवे।

इस प्रकार कुल मिला कर ८० जिनमें १ अग्नि स्थापना की और १ अग्नि पूजा की अवशिष्ट ७८ हवन की सर्व ८० आहुतियें देनी चाहिये। अनन्तर आचार्य्य उठ कर वर के दक्षिण भाग में बैठी हुई कन्या के सामने खड़ा होकर कुश और तीर्थोदक लेकर अभिषेक मंत्र पढ़ता हुआ अभिषेक करे।

अभिषेक मंत्र

ॐ अर्हं इदं मानस मध्यासीनौ स्वध्यासीनौ स्थितौ सुस्थितौ तदस्तु वा सनातनः सगम· अर्हं ॐ ॥

इस तरह मन्त्रोच्चारण पूर्वक वर वधू के ऊपर कुश और तीर्थोदक से अभिषेक करने के बाद आचार्य्य—

ॐ नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ।

इतना कह कर अक्षत और रोकड हाथ में लेकर वर वधू के ऊपर से फेंकते (वारते) समय निम्न मन्त्र पढ़ें।

अक्षत मन्त्र

विदित वा गोत्र सम्बन्ध करणो नैव प्रकाश्यता जनाग्रतः ॥

यह कह कर वर वधू को बधावे।

बाद में पहिले वर की ओर से गोत्र (कुल) प्रकाश करे उसके बाद में वर के माता की ओर के लोग अपना गोत्र प्रकट करे। अनन्तर कन्या के पिता पक्ष के लोग अपना गोत्रोच्चार करे तत्पश्चात् कन्या के मातृ पक्षीय लोग अपना गोत्र प्रकाशित करे, फिर आचार्य्य मन्त्रोच्चारण करे। नीचे गोत्रोच्चार का प्रकार बतलाते हैं।

वर पक्षीय गोत्रोच्चार

ॐ अर्हं अमुक गोत्रीयः, इयत् प्रवरः अमुक ज्ञातीय . अमुकान्वय अमुकस्य प्रपौत्रः, अमुकस्य पौत्रः, अमुकस्य पुत्र. अमुक नामावरः।

इयत्प्रवरा अमुक ज्ञातीय, अमुकस्य दौहित्रः, अमुकाऽन्वयजात., अमुकस्य प्रदौहित्र., अमुक नामा सर्व गुणान्वितो वरयिता।

ततः कन्या पक्षीय गोत्रोचार

अमुकगोत्रीया, इयत्प्रवरान्विता, अमुक ज्ञातीया, अमुकाऽन्वयजाता, अमुकस्य प्रपौत्री, अमुकस्य पौत्री, अमुकस्य पुत्री अमुकी नाम्नी कन्या।

इयत्प्रवरान्विता, अमुक ज्ञातीया, अमुकान्वयजाता अमुकस्य प्रदौहित्री अमुकस्य दौहित्री, अमुका वर्या कन्या।

इस कन्यापक्षीय गोत्रोचार को ३ वार कहने के बाद में आगे का मंत्र पढ़े:—

तदेतयो र्वर्या वरयोः वरवर्य्ययो निविड़ो विवाह संबंधोऽस्तु शांतिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु धृतिरस्तु, बुद्धिरस्तु, धन सन्तान वृद्धिरस्तु, अर्हं ॐ स्वाहा॥

यह पढ आचार्य्य वर वधू के पास से पुष्प, केशर, चंदन, आदि से अग्नि की पूजा करावे, तदनन्तर चावल या चावल की फूलियें (खोलें) वर वधू के हाथ में देकर आचार्य्य निम्न लिखित साक्षी मंत्र पढ कर सुनावें।

साचो मन्त्र

ॐ अर्हं अनादि विश्व, मनादिरात्मा, अनादि-कालोऽनादि कर्म, अनादि सबन्धो देहिनां देहानुमतानुगताना क्रोधाऽहकार छद्म लोभै. सञ्ज्वलन प्रत्याख्याना वरणा प्रत्याख्याना ऽनन्ताऽनुबन्धिभि शब्द रूप रस गन्ध स्पर्शे रिच्छाऽनिच्छा परि मक्लितै सम्बन्धोऽनुबधः प्रतिबन्धः सयोग सुगम सुकृत सुनुष्ठितः सुनिवृत्तः सुप्राप्त., सुलब्धो द्रव्यभाव विशेषेण तदस्तु वा सिद्धि प्रत्यक्ष केवलि प्रत्यक्ष चतुर्णिकाय देव प्रत्यक्ष विवाह प्रधानाग्नि प्रत्यक्ष नाग प्रत्यक्ष नर नारि प्रत्यक्ष नृप प्रत्यक्ष, जल प्रत्यक्ष गुरु प्रत्यक्ष मातृ प्रत्यक्ष पितृ प्रत्यक्ष, मातृ पक्ष प्रत्यक्ष ज्ञाति स्वजन बन्धु प्रत्यक्ष, सम्बन्ध सुकृत तदनुष्ठित सु प्राप्त सु सम्बद्ध सु सगतः तत्प्रदक्षिणी क्रियतां तेजोराशि विभावसु अर्हं ॐ स्वाहा ॥

यह मंत्र पढ़ कर वरवधू अपने हाथ में लेके चावल या चावल की धांणी (खोलें) अग्नि में होम दें। अनन्तर यदि फेरे खाने का समय आगया हो तो उनकी तय्यारी करे।

चार फेरे

अब फेरे का समय आजाने से अग्नि कुण्ड के चारों तर्फ वर वधू फेरे (प्रदक्षिणा) देवे, तथा उस समय कन्या का भाई १ शूर्प में चावल या चावल की धांणियें लेके एक ओर खड़ा रहे और चारों फेरों में वरवधू एक २ फेरा प्रति चारों तरफ से धांणियों की एक २ मुट्ठी भर अग्नि कुण्ड में होमे। पहिले के तीन फेरों में कन्या अगाड़ी रहे और वर पीछे रहे तथा चौथे फेरे में कन्या पीछे रहे और वर अगाड़ी रहे। एक २ फेरे में आचार्य्य मंत्र पढ़ता रहे। अब वे मंत्र लिखते हैं।

प्रथम फेरे का मंत्र

ॐ अर्हं कर्मास्ति, मोहनीय मस्ति दीर्घस्थित्यस्ति, निविड मस्ति, दुच्छेद्यमस्ति, अष्टाविंशतिप्रकृत्यस्ति, क्रोधोऽस्ति, मानोस्ति, मायाऽस्ति, लोभोऽस्ति, संज्वलनोस्ति प्रत्याख्यानोऽस्ति, अप्रत्याख्यानोऽस्ति अन-

न्ताऽनुबन्ध्यस्ति, चतुश्चतुर्विधोऽस्ति, हास्य-मस्ति, रतिरस्ति अरतिरस्ति, भयमस्ति, जुगुप्सोऽस्ति, शोकोऽस्ति, पुरुषवेदोस्ति, स्त्रीवेदोऽस्ति, नपुंसकवेदोऽस्ति, मिथ्यात्व मस्ति, मिश्रमस्ति, सम्यक्त्वमस्ति, सप्ततिकोटि सागर स्थित्यस्ति अर्हं ॐ स्वाहा ॥ १ ॥

दूसरे फेरे का मन्त्र

तदस्तु वा निकाचित् निबिडबद्ध मोहनीय कर्म्मोदय कृत स्नेह. सुकृतोऽस्तु सुनिष्ठितोस्तु सु सवद्धोऽस्तु आभ्र्वे मक्षयोस्तु तत् प्रदक्षिणी क्रियता विभावसु. । अर्हं ॐ स्वाहा ॥ २ ॥

तीसरे फेरे का मन्त्र

ॐ अर्हं कर्म्मास्ति, वेदनीयमस्ति साता-मस्ति, असाता मस्ति, सुवेद्यसात दुर्वेद्यमसात, सुवर्गणा श्रवण सात दुर्वर्गणा श्रवण मसात शुभ पुद्गला दर्शन सात दुष्पुद्गला दर्शन मसात,

शुभ षडरसास्वादन सात, अशुभ षड् रसा स्वादन मसातं शुभ गन्धा घ्राणं सात अशुभ गन्धा घ्राण मसात, शुभ पुद्गला स्पर्शः सातं, अशुभ पुद्गला स्पर्शोऽसात, सर्वं सुखकृतं सात, सर्वं दुःखकृदसात साता वेदनीय माभूत् साता वेदनीय तत् प्रदक्षिणी क्रियतां विभावसुः अर्हं ॐ स्वाहा ॥ ३ ॥

इतना मन्त्र आचार्य के पढ़ लेने पर वर वधू अग्नि के तीसरा फेरा दे और पहिले की तरह ही वर वधू अग्नि में धान की लाई (चावल की खीलें) होमे। इस तरह तीनों फेरे समाप्त हो जाने पर चौथे फेरे में वर का हाथ ऊपर और कन्या का हाथ नीचे होना चाहिये। तथा चौथे फेरे में कन्या पीछे रहनी चाहिये। एवं पूर्व क्रमाऽनुसार इस फेरे में भी धान के लाई की मुट्ठी अग्निकुण्ड में होमनी चाहिये। इस जगह पर प्रचलित प्रथा के अनुसार वर कन्या के प्रश्नोत्तर, भी होनी चाहिये। इससे प्रथम, सप्त बचनों में प्रश्नोत्तर लिखते हैं।

वर की ओर से सप्त वचन

१—मम कुटुम्बि जनानां यथा योग्य विनय शुश्रूपा कर्त्तव्या।

२—मम आज्ञा न लोपनीया ।
३—मम मातृ पित्रादीना मम च मदुक्त [illegible] वचन न वक्त व्यम् ।
४—मम मित्रादीनां सान्यादि सत्पात्राणां चगृहागमने सति आहारादि दाने कदापित मनस्कया त्वया न भाव्यम् ।
५—रात्रौ पर गृहे न गन्तव्यम् ।
६—बहुजन सकीर्णे स्थाने न गन्तव्यम् ।
७—कुत्सित धर्माणां पापिनां च गृहे न गन्तव्यम् ।

एतानि मदुक्त सप्तवचनानि चेत्व मह्री करोषि तर्हैवत्वां गृह्णामि ।

कन्या की ओर से सप्त वचन

ममाऽपि सप्त वचनानि भवता अङ्गी कर्त्तव्यानि तद्यथा —

१—अन्य स्त्रीभि सह क्रीडा न कर्त्तव्या ।
२—वेश्या गृहे न गन्तव्यम् ।
३—द्यूतादि क्रीडा न कार्य्या ।
४—योग्य द्रव्य मुपार्ज्य वस्त्राऽऽभरणादिना कृत्वामदीया रक्षा कर्त्तव्या ।
५—धर्म स्थान गमने निषेधो न कर्त्तव्य.
६—मत्त सकाशात् गुप्तवार्त्ता न रक्षणीया ।
७—मम गुप्तवार्त्ता अन्यस्य कस्य चिदग्रे न प्रकाशनीया ।

एतानि ममार्ऽपि सप्त वचनानि भवता अङ्गीकार कर्त्तव्यानि तर्हि अहं पाणिग्रहण करिष्यामि।

इस प्रकार वर वधू के आपस में सप्तवचन अङ्गीकार कर लेने पर चौथा फेरा अग्नि के चारों ओर देना चाहिये, तथा आचार्य्य चतुर्थ लाजा कर्म का मंत्र पढ़े।

चौथे फेरे का मन्त्र

ॐ ह्रीँ अर्हँ सहजोऽस्ति स्वभावोस्ति सम्बन्धोऽस्ति, प्रतिबद्धोऽस्ति, मोहनीयमस्ति वेदनीयमस्ति, नामास्ति, गोत्रमस्ति, क्रियाबद्ध मस्ति, कायबद्ध मस्ति, सांसारिक सम्बन्धा अर्हँ ॐ स्वाहा॥

इस तरह मंत्र पढ़ कर चौथी बार वर वधू अग्नि की प्रदक्षिणा देकर धान की लाई एक २ मुट्ठी अग्नि में होम दे। तदनन्तर दोनों अपने स्थान पर बैठ जावें परन्तु वधू वर के बांये भाग में बैठे। बाद में आचार्य्य आशीर्वाद मंत्र पढ़े।

आशीर्वाद (वासक्षेप) मंत्र

शक्रादि देव कोटि परिवृत्तो भोग्य कर्म फल भोगाय सांसारिक जीव व्यवहार मार्ग

सदर्शनाय सुनदा सुमगले पर्यणेपीत् ज्ञात मज्ञा-
तवा तदनुष्ठानाऽंष्ठित मस्तु अर्हं ॐ स्वाहा ॥

यह मत्र पढ कर आचार्य वरवधु के मस्तक पर वासक्षेप तथा सुगन्धित पदार्थ याने केशर, कस्तूरी आदि लेके डाले। इसके बाद कर मोचन करावे, कर मोचन का मत्र निम्न प्रकार है —

कर मोचन (हथलेवा छुड़ाने) का मत्र

ॐ अर्हं जीवस्त्व कर्मणा वद्धः ज्ञाना वरणेन वद्ध., दर्शना वरणेन वद्धः, वेदनीयेन वद्धः, मोहनीयेन वद्ध', आयुषा वद्ध., स्थित्या वद्धः, रसेन वद्धः, प्रदेशेन वद्धः, तदस्तुते मोचो गुण स्थाना रोह क्रमेण मुक्तयो' करयो रस्तु वा स्नेह सम्बधोऽखण्डितः अर्हं ॐ स्वाहा ॥

यह मत्र पढ कर दोनों के हाथ (वर व वधू के हाथ जो पहिले हथलेवा में जोडा दिये थे उन्हें) छुडा दे और प्रथम उन दोनों के हाथों को दूध से धोकर बाद में पानी से धोवे। तत्पश्चात् कन्या का पिता अपनी शक्त्यानुसार कन्या दान दे। सब की लिष्ट हो जाने के बाद समग्र द्रव्य को वर वधू को सौंपते समय निम्न मत्रोच्चारण करे।

कन्या दान मंत्र

अद्य अमुक सम्वत्सरे अमुकायने, अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे, अमुक करणे अमुक मुहूर्त्ते अमुक नामाऽहं (कन्या का पिता आदि कन्या दान देने वाला अपना नाम कहे) पूर्व कर्म सम्बन्धाऽनु बद्ध कृतैतत्कन्यादान फल प्रतिष्ठासिद्धयर्थ इमानि वस्त्र गंध माल्याऽलंकारं सुवर्णरूप्यकाणि, मणिभूषण रत्नमयादिनी नाना वस्तु जातानि अमुक नाम्ने वराय तुभ्य मह सम्प्रददे इद प्रति गृहाण ॥

इतना पढ लेने के बाद थोड़ा सा जल वर के हाथ पर डाल दे। अनन्तर वर कहे "प्रतिगृह्णामि" बाद में आचार्य्य कहे:—

सु प्रतिगृहीतोऽस्तु, शान्तिरस्तु, तुष्टिरस्तु, पुष्टिरस्तु ऋद्धिरस्तु, वृद्धिरस्तु, धन सन्तान वृद्धिरस्तु ॥

शान्तिपाठः

इतना कह कर तीर्थोदक से वरवधू पर आचार्य अभिषेक करे।

अनन्तर कन्या का पिता वरवधू की आरती उतारे (एक थाल में ताम्बूल पान पर कपूर प्रज्ज्वलित कर आरती करे) बाद में वर नवग्रह दश दिक्पाल, और सिद्ध विनायक यंत्र का विसर्जन करे। विसर्जन करने की रीति यह है कि—एक पात्र (थाल आदि) में कलश १ जल से भरा हुआ केशर चन्दन से भरी हुई कटोरी १ पुष्प धूप, दीप, अक्षत, नैवद्य, फल, श्रीफल २ नगदी रोकड़ २, आदि लेकर गद्दी से नीचे उतर कर खड़े रहे, फिर आचार्य्य विसर्जन मंत्र पढ़े।

विसर्जन मंत्र

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्वं कृपया देव! क्षमस्व परमेश्वर ॥ १ ॥
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि, शास्त्रोक्तं न कृतं मया।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु, त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर! ॥२॥
आह्वानं नैव जानामि, नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जनं नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वर ॥ ३ ॥

'आहूताः ये पुरा देवाः, लब्ध भागाः यथाक्रमम्।
ते मयाऽभ्यर्चिताः भक्त्या, सर्वेयान्तु यथा-
स्थितिम् ॥ ४ ॥

ॐ सर्वेदेवाः स्व स्व स्थानं गच्छन्तु पुन रागम
नाय स्वाहा ॥

इतना पढ कर पात्र में रखी हुई वस्तुओं से पूजा करके बाद में नमस्कार करके नगदी को पट्टा के नीचे रख कर, जरा २ सा पट्टा को हिला दे। इसके बाद वर कन्या बारात के डेरे जावे, तदनन्तर कुल कर मातृ स्थापना और शासन देवी का विसर्जन करे।

इनका विसर्जन "आचार दिनकर सूत्र" में सातवें रोज करना कहा है, कदाचित् उस रोज न बन सके तो जिस रोज वर कन्या को विदा करे उस दिन याने विवाह से तीसरे दिन ही उनका विसर्जन करदे तथा जैसा अपना कुलाचार हो उसी प्रमाण से करें, विधि इस प्रकार है।

वर वधू दोनों जन कौतुकागार याने जहाँ मातृ स्थापना की हुई है वहाँ पर जावें और एक थाल में जल पूरित कलश १, केशर चन्दन से भरी हुई कटोरी १, पुष्प, धूप दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, नगदी में रु० लेकर रु० पट्टा के

नीचे रख दे, तथा ऊपर लिखा हुआ विसर्जन मन्त्र (ॐ आज्ञाहीन क्रियाहीनं आदि) पढ़ कर उनका विसर्जन करे। अनन्तर पट्टा को जरा २ सा हिलादे, तथा यहीं पर मातृ स्थापना और षष्ठीदेवी का भी विसर्जन करादे। बाद में दोनों वर वधू बडे ठाठ बाट से गाजे बाजे के साथ श्री जिन मन्दिरजी में जाकर भगवान् के सन्मुख स्वस्तिक करें। ऊपर मिष्टान्न, फल, श्रीफल, और रोकड द्रव्य आदि यथाशक्ति चढा कर फिर अरिहन्त देव का दर्शन करें। यदि जैन गुरु का संयोग हो तो श्री गुरु महाराज के अगाड़ी भी स्वस्तिक कर ऊपर मिष्टान्न, श्रीफल, द्रव्य आदि यथाशक्ति चढावे, गुरु के पास से धर्मोपदेश सुन कर, वासक्षेप ले अपने घर को लौट जायें।

ऊपर जो कुलकर, शासनदेवी और मातृका की विसर्जन विधि लिखी हुई है उसी तरह घर के घर भी विसर्जन कर देना चाहिये।

यह सब विधि शास्त्रोक्त याने आचार दिनकर सूत्र के अनुसार यहां पर लिखी गई है। परन्तु वर्तमान समय में विवाह के प्रारंभ से लेकर समाप्ति तक जो जो रीतियां प्रचलित हैं वे सब शास्त्रोक्त नहीं हैं। जैसे कि—वेश्या, भांड का नाच कराना, फुलवारी लुगाना, आतिशबाजी छुडवाना, जूवा खेलना, भूर और गुडचडी बाँटना आदि २

कुप्रथाओं से केवल हानि ही नहीं बल्कि परिश्रम द्वारा पैदा किये द्रव्य को भी निरर्थक खो देना है और खोकर भी शुभ क्रिया का बन्धन न कर उल्टा हिंसा पापादि का बंधन करके आत्मा को भारी कर नरक निगोद में डालेना है। इस हेतु शास्त्रोक्त रीति से यह शुभ क्रिया कर आत्मा को शुभ मार्ग में लगा कर पुण्य बंधन करना चाहिये। इत्यलम्॥

श्लोक

यस्योपसर्गाः स्मरणेन यांति,
विश्वपदीया श्वगुणा न मान्ति ॥
मृगस्य लक्ष्मा कनकस्य कांतिः,
संघस्य शान्ति सकरोतु शान्तिः ॥

दोहा

शोक है यदि जैन होकर, नैन हम खोले नहीं।
धर्म खोकर पाप बोकर, गर्व से डोले नहीं ॥१॥
(तो) व्यर्थ है धन केलि होना, ज्ञान भी बेकार है।
जिनको न निज का ज्ञान है, उनको सदा धिक्कार है ॥२॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

वेदी का आकार

पूर्व

सिद्धयंत्र रखना

पौन फुट

सवा फुट

नवग्रह रखना

पौन फुट

सवा फुट

उत्तर

१० दिक्पाल रखना

पौन फुट

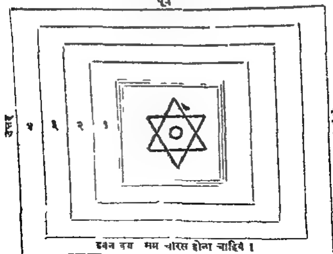
सवा फुट

पौने चार फुट लम्बी

दक्षिण

सवा दो फुट चौड़ी

पश्चिम

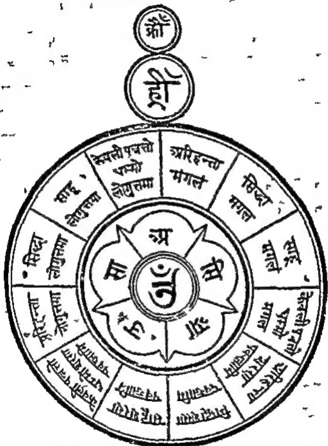


सिद्धयंत्र तथा विनायक यंत्र

सिद्धयंत्र में कुल तीन वलय होते हैं। पहिले वलय में तो ॐकार लिखना चाहिये, दूसरे वलय में पांच पद के नाम पाच खण बनाके लिखने चाहिये। एवं तीसरे वलय में बारह खाने बना करके जुदे २ बारह नाम लिखने चाहिये। वे बारह नाम निम्न प्रकार से हैं। अरिहन्ता लोगुत्तमा १, सिद्धालोगुत्तमा २, साहूलोगुत्तमा ३, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा ४, अरिहन्ता मंगलं ५, सिद्धा मंगल ६, साहू मगल ७, केवलि पन्नत्तो धम्मो मगलं ८, अरिहन्ता शरणं पव्वज्जामि ९, सिद्धा सरणं पव्वज्जामि १०, साहू शरणं पव्वज्जामि ११, केवलि पन्नत्तो धम्मो शरणं पवज्जामि १२॥

इस प्रकार बारह खानों में बारह नाम लिखे पीछे ऊपर एक छोटा सा गोल आकार करके उसमें ह्रींकार लिखें और उसके ऊपर उससे भी छोटा एक गोलाकार बना उसमें क्रोंकार लिखना चाहिये। आगे सिद्ध यंत्र तथा विनायक यंत्र का चित्र दिया जा रहा है।

सिद्ध यन्त्र तथा विनायक यंत्र का चित्र



यह सिद्ध यंत्र तथा विनायक यंत्र प्राय सभी जैन मन्दिरों में चांदी या तांबे पर बना हुआ रहना चाहिये क्योंकि इसकी पूजा से अपने को आनन्द मंगल की प्राप्ति होती है। इति शुभम् ॥

शुद्धि पत्र



पेज न०	लाइन न०	अशुद्ध	शुद्ध
१	३	उग्रवान	तरुण
४	१२	मैत्री	मैत्री
५	५	कन्यादान	कन्यादाने
११	१८	पनरा	पन्द्रह
१४	१३	गन्ध	गन्ध
१७	११	ददत	ददता
२१	४	पदाथ	पदार्थ
३१	१२	यशस्विनमिधानाय	यशस्मानभिधानाय
३४	४	पष्ठ	षष्ठ
३४	६	साहिताय	सहिताय
४०	१०	चार	चार.
४१	१०	समभुतप्णोऽसि (के आगे) सम्मागमोसि, समविहारोसि, समविपयोसि (और पढ़ें)	
४२	१६	सबल	सकल

पेज न०	लाइन न०	अशुद्ध	शुद्ध
४३	८	स्वस्तिप्रदे	स्वस्तिप्रदे
४४	४	पुष्टि ७,,	पुष्टि कुरु २,
४७	१२	जय	जय
४८	७	भुवनपत्नीन्	भुवनपतीन्
४८	८	पारपात्राया	पारपाया
५३	१२	इद मानस	इदं मासन
५४	१७-१९	अमुकस्य दौहित्र, अमुकाऽन्वयाजात, अमुकस्य प्रदौहित्र,	अमुकाऽन्वयजात, अमुकस्य प्रदौहित्र, अमुकस्य दौहित्र,
५५	१८	आचर्य्य	आचार्य्य
५७	१८	मायिकोस्ति	मायोस्ति
५८	३	जुगुप्साऽस्ति	जुगुप्साऽस्ति
५८	१०	आभाव	आभव
५८	१६	श्रवर्ण	श्रवण
५८	१७	दरानं	दर्शन
६०	२	निष्ठरच	निठुरच
६४	१	सीर्योदक	सोर्योदक (शुद्ध जल)

